मेरा पन्ना

चकमक में छपे बच्चों की किस्से-कहानियों, लेखों व चित्रों का संकलन

तीस की मुर्गी बीस में

एकलव्य

ये मज़ेदार पत्र तथा प्रमाण पत्र प्रतियोगिता में आई रचनाओं से चुने गए हैं।

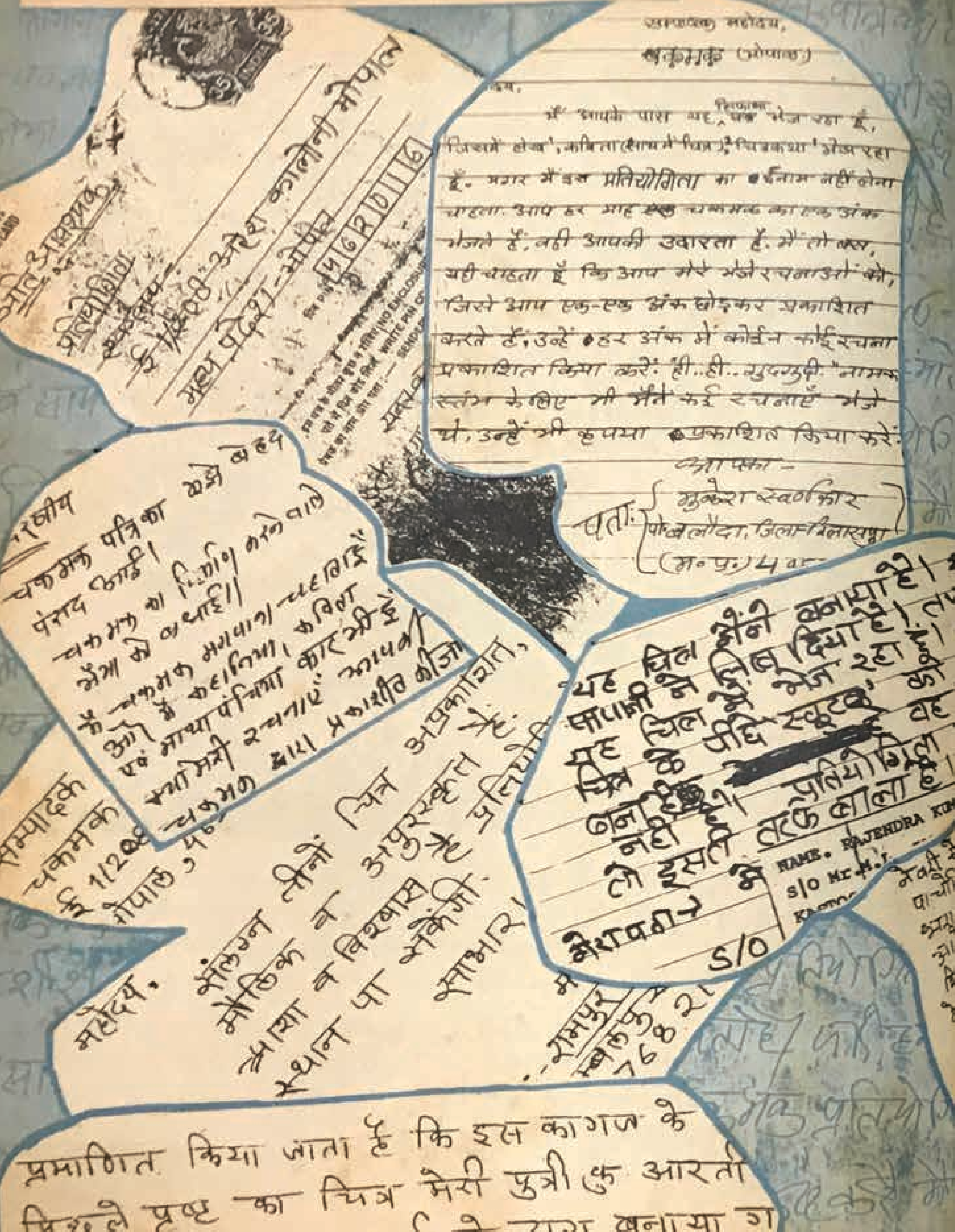

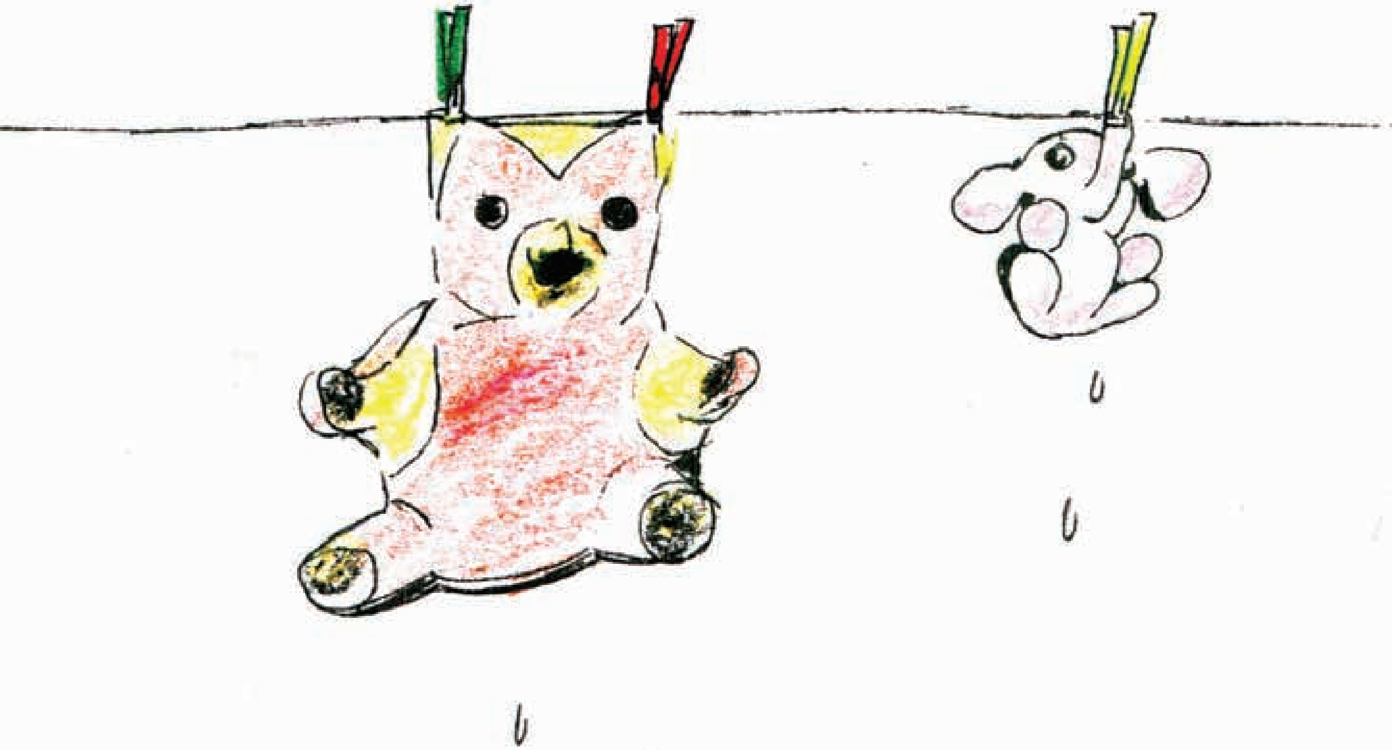

मेरा पन्ना

चकमक में छपे बच्चों के किस्से-कहानियों, लेखों व चित्रों का संकलन

तीस की मुर्गी बीस में

चित्र: अस्सू और कूनी, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, अप्रैल 2008

एकलव्य

भूमिका

चकमक में बच्चों के लिए विज्ञान, कला और साहित्य के साथ-साथ जीवन के तमाम पहलुओं पर सामग्री प्रकाशित होती है। 1985 से प्रकाशित हो रही इस पत्रिका में हम केवल बच्चों के लिए ही नहीं, बल्कि बच्चों द्वारा तैयार की गई सामग्री भी शामिल करते आ रहे हैं। बच्चों के विचारों, उनकी कल्पनाशीलता और रचनाओं के लिए निश्चित तौर पर और नियमित रूप से जगह रहे, इसी इरादे से 'मेरा पन्ना' कॉलम दूसरे अंक से शुरू किया गया था। यह कॉलम आज भी चकमक में प्रकाशित होता है।

जब हम चकमक के 400वें अंक की तैयारी करने लगे तो लाज़िमी था कि हम पीछे मुड़कर इस लम्बे सफर पर गौर करते। पुराने अंकों को पलटते। ऐसा करते समय हमें एहसास हुआ कि हमारे पास एक खज़ाना है, बच्चों की रचनाओं का। पिछले 34 सालों से बच्चे लगातार हमें लिखते आ रहे हैं। ऐसा न हो कि उनकी रचनाएँ सिर्फ पत्रिका के पन्नों के बीच सिमटकर रह जाएँ, सो हमने 'मेरा पन्ना' की रचनाओं से एक किताब बनाने के बारे में सोचा। हमें इतनी मज़ेदार रचनाएँ मिलीं कि हमने एक नहीं, दो किताबें बना डालीं– *तीस की मुर्गी बीस में,* जो 'मेरा पन्ना' में प्रकाशित कहानियों-किस्सों का संकलन है और *मेरा खच्चर डण्डा है,* जो कविताओं का संकलन है। दोनों किताबों में हमने बच्चों के बनाए चित्र भी शामिल किए हैं। इनमें से कुछ चकमक में प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ अप्रकाशित हैं।

इन किताबों के लिए रचनाओं को छाँटते समय हमने वही मापदण्ड इस्तेमाल किए, जो हम बड़ों की रचनाओं का चयन करते समय इस्तेमाल करते हैं। साथ ही हमने किन्हीं खास विषयों को नहीं चुना, और ना ही हमने सबसे 'अच्छी' रचना या चित्र को चुना। बच्चों की सृजनात्मकता, उनके दिमाग में दौड़ती हुई काल्पनिक व वास्तविक, विविध बातों को हमने यहाँ दिखाने की कोशिश की है। इन रचनाओं को पढ़ेंगे तो आप पाएँगे कि यह रचनाएँ बच्चों के 'सुकोमल' व 'नासमझ' होने की छवि को पुख्ता तौर पर खारिज करती

हैं। बच्चे भी अपने आसपास के जीवन (व दूरदराज़ के भी) की छोटी-बड़ी घटनाओं पर उतनी ही गम्भीरता से विचार करते हैं/सवाल रखते हैं, जितना कि बड़े।

'मेरा पन्ना' की इन किताबों के साथ ही हमने एक और किताब बनाई है— *भूलभुलैया*। ये पहेलियों की किताब है। 'माथापच्ची' चकमक के उस कॉलम का नाम है जो पहले अंक से आज तक प्रकाशित होता आ रहा है। इसमें वास्तविक जीवन से जुड़ी अलग-अलग तरह की पहेलियाँ होती हैं। कुछ पहेलियाँ गणितीय होती हैं, तो कुछ शब्द-पहेलियाँ होती हैं। कभी-कभी जवाब चित्रों में ढूँढ़ना होता है, तो कभी सुरागों के ज़रिए एक निष्कर्ष पर पहुँचना होता है। इनके अलावा चकमक में हमने चित्रपहेली, भूलभुलैया, अन्तर ढूँढ़ो, सुडोकू, छुपनछुपाई, गलतियाँ ढूँढ़ो जैसी मज़ेदार चीज़ें भी दी हैं। बच्चों ने इनको बहुत पसन्द किया है। पहेलियों की इस किताब में भी ये सारी चीज़ें हैं। इस किताब की सज्जा भी हमने बच्चों के चित्रों से ही की है।

इस तरह हमने चकमक के अंकों से तीन किताबें तैयार की हैं।

हम उन सभी के आभारी हैं जिनका काम हमने इन किताबों में इस्तेमाल किया है। हर रचना, चाहे गद्य, कविता या चित्र हो, के साथ हमने यह भी बताया है कि वह किस अंक में प्रकाशित हुई थी। पिछले कुछ सालों में छपी सामग्री को छोड़कर हमारे पास सभी बाल रचनाकारों का पता नहीं है। कुछ रचनाएँ चकमक में बीस साल से भी पहले छपी थीं और इनके रचनाकार अब बड़े भी हो गए होंगे। कुछ रचनाकारों के बारे में हमारे पास पूरी जानकारी नहीं है, कहीं बच्चे का नाम नहीं है तो कहीं उम्र या पता नहीं है। इसलिए अगर आपको अपनी रचना इन किताबों में मिलती है, तो हमसे ज़रूर सम्पर्क करें।

विनता विश्वनाथन
chakmak@eklavya.in
+91 9753011077

क्या कहाँ हैं...

लेख

तीस की मुर्गी बीस में	8
प्यार	10
दोस्त	11
पापा जब बच्चे थे...	12
पानी नहीं तो अनाज नहीं	14
गर्मी की छुट्टियाँ	16
मेरा नटखट भाई	17
लालची राजा	20
कन्या भोज	21
गानेवाला पेड़	23
काली को चढ़ा नशा	24
दीदी	27
दाल फोकट	28
कुटेल गद्दा	29
हमारी कान्हा यात्रा	30
आम के भूत	33
कुएँ और घास की कहानी	35
बकरी और कुत्ता	36
नर्मदा जी के किनारे रहते हम	37
क्या इस समस्या का हल है?	38
जब मेरे घर के सामने रोड बना	39
चाँद कीचड़ में	40
मरकने गुरुजी	42
पहाड़ और औरत	43
मेरी नोटबुक	44
इज़्ज़त	46
मेरा दोस्त गुलमोहर	48
वो हमारे क्या लगते हैं?	50
जब मैं क्रिकेट खेल रहा था	52
चप्पल का पेड़	54
रहने दीजिए	55
एक बार की बात	56
चूहा, शेर और भूत	57
हिम्मत मत हारो	58
मैदान की कहानी	60
अम्बुज जहाज की दास्तान	62
कारहे में मछलियों की बाढ़	65
सूरज और घर	66
चके का गुस्सा	67
शैतान फुग्गा	68
मेरी कक्षा का पहला पीरियड	69
मेरा पहला अनुभव	70
माँ और कम्पनी	71
दो दोस्त	72
खरगोश और इल्ली	73
हमारी गाय	74
मेरे पापा की स्कूटर	76
जम्बो हाथी	77
महुआ की बिनाई	79

मेरा पन्ना

क्या कहाँ हैं...

चित्र

अस्सू और कूना	1
हर्ष रावत	6
निदा	8
अनाम	9
रिंकी	10
अमृता यादव	11
नील	12
रिया सोनी	13
विवेक गौर	14
रोहित	16
अखिलेश	17
किम्या नेहरा	18
प्रियव्रत सोनी	20
शिवराज	21
आर्णव	22
शिवाली धोंडियाल	24
कोमल	25
प्रियांशी मालवीय	26
सुहाना	27
विपुल नागर	28
योहन	29
ईशान निगम	32
हेतांशी डी नायक	34
चिन्नुआ	36
कृष हेगड़े	38
योगेन्द्र	39
सुमुखी	40
विद्या कुमारी	42
विहान बिन्दल	43
प्रीति	44
अभिषेक	46
देवांशी जैन	48
रेवा टंडन	50
तुषार भाटिया	52
गार्गी शिंगणे	54
ज़ोया	55
गार्गी कोलपकर	56
शिवांगी	57
महेन्द्र सोनी	58
राजन्य प्रजापति	60
मनराज मीणा	63
भवानी	64
फारिक	64
त्विशा	66
खुशबू साहू	67
अभिनव गुप्ता	68
अभ्यांश भटनागर	69
देवेश शर्मा	70
आकांक्षा खादटकर	71
अरीना गुप्ता	72
विजय तेलहानी	73
राजेश	74
गोपाल	76
सोनू मालवीय	77
रिद्धि गुप्ता	78

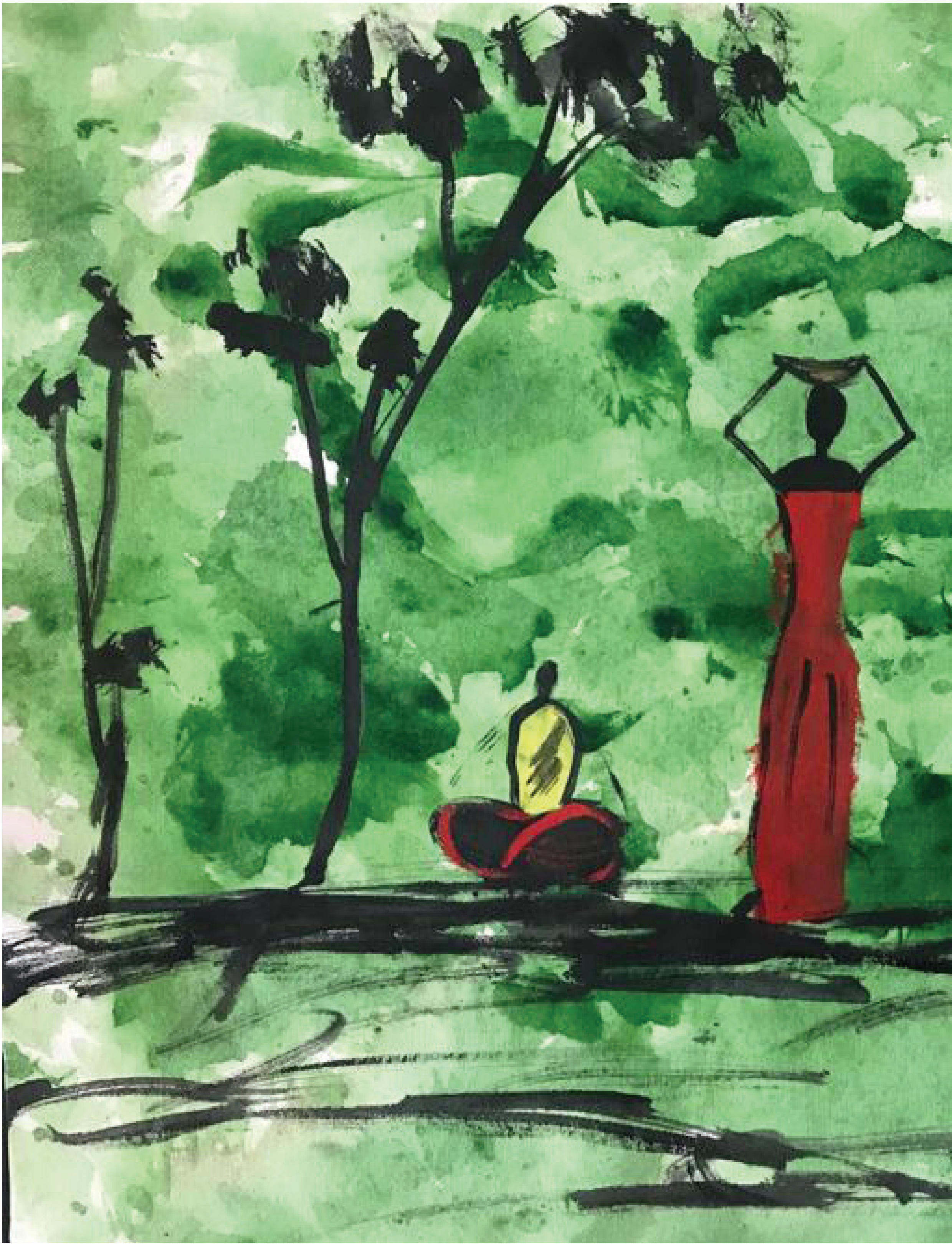

चित्र: हर्ष रावत, दस वर्ष, द मोटिवेशन - अ लर्निंग सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश, अक्टूबर 2019

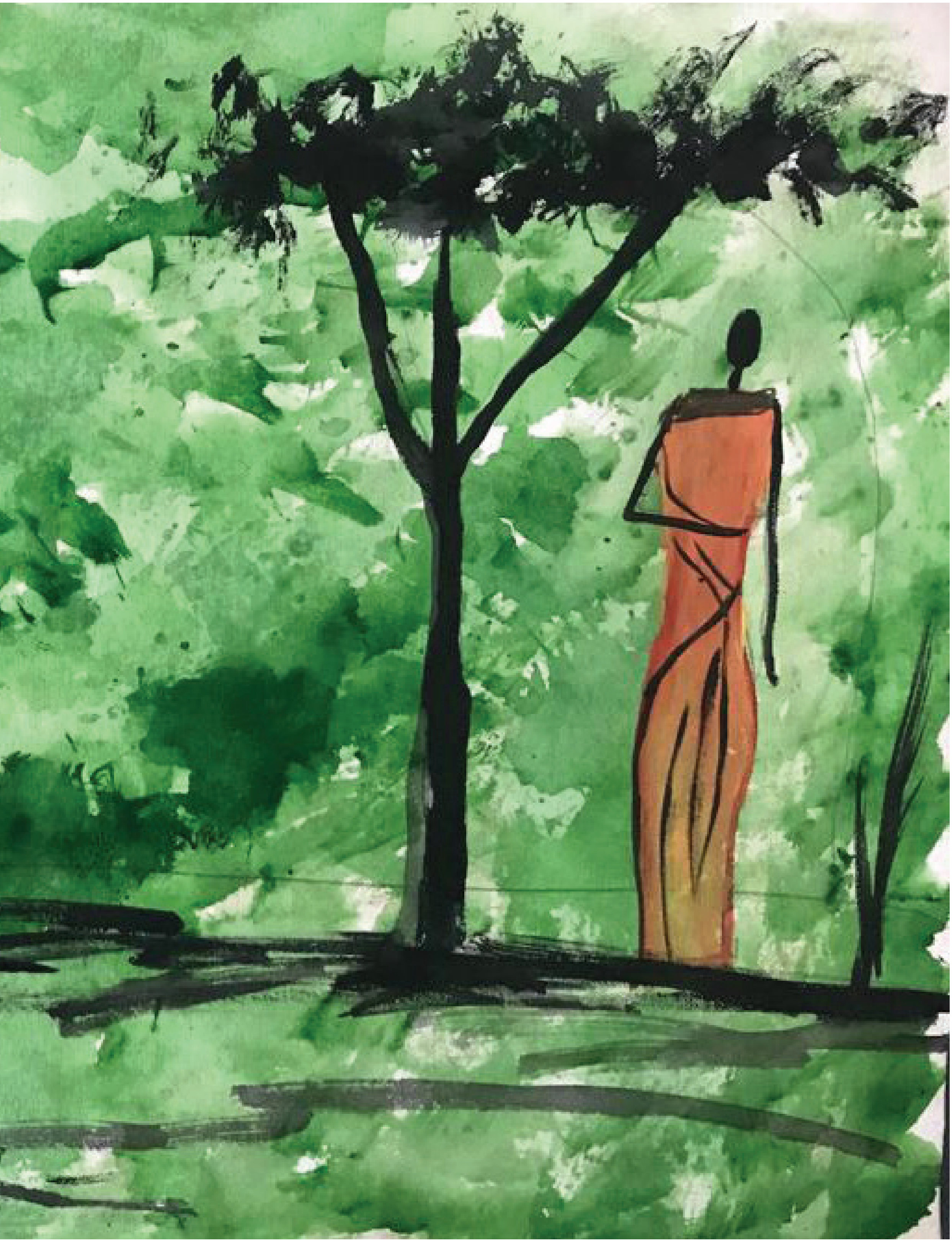

तीस की मुर्गी बीस में

गोकुल कुमार
छठवीं, बोईजगवाड़ा, देवास, मध्य प्रदेश
जुलाई 1990

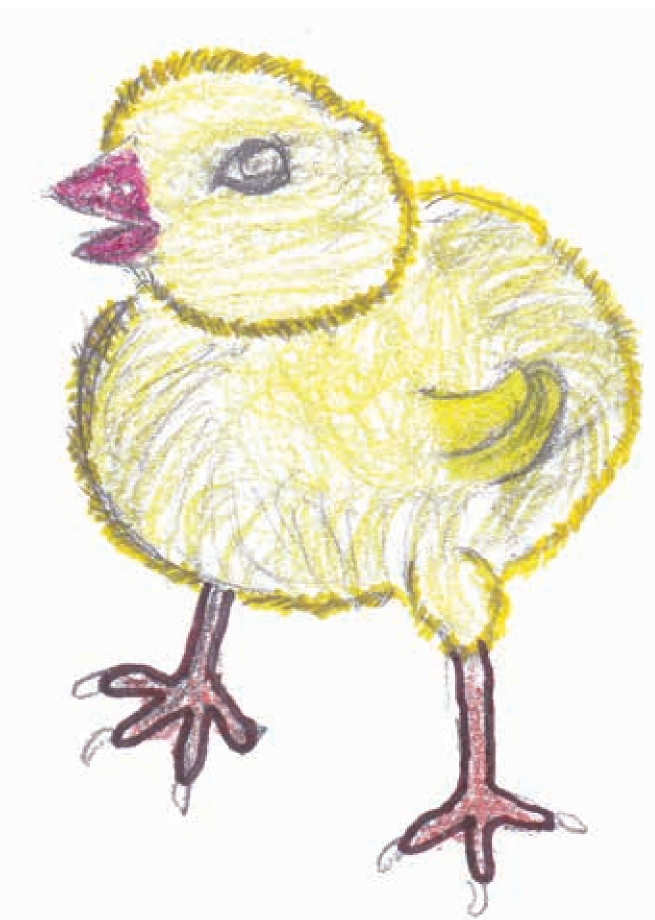

चित्र: निदा, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरे दोस्त बाज़ार जा रहे थे। मैंने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो, तो उन्होंने कहा कि हम बाज़ार जा रहे हैं। मैंने कहा कि मैं भी चलता हूँ। फिर मैंने कहा कि मेरे पास तो पैसे ही नहीं हैं, मैं जाकर क्या करूँगा। फिर मैंने सोचा कि मेरे घर में मुर्गियाँ बहुत सारी हैं, एक मुर्गी को पकड़कर बाज़ार ले चलते हैं। हम फिर उस मुर्गी को पकड़कर बाज़ार ले गए।

फिर मैंने कहा कि मुर्गी ले लो। एक दुकानदार ने कहा कि, क्यों रे मुर्गी कितने में देता है। मैंने कहा कि पच्चीस रुपए लूँगा। उसने कहा कि देना है, तो ये ले दस रुपया। मैंने कहा कि दस रुपए में नहीं दूँगा।

फिर मैं आगे गया, तो फिर मुझे एक ने और पूछा कि आ रे मुर्गीवाले, इधर आ। मैं गया। उसने पूछा कि यह बेचने को लाया है, तो मैंने कहा कि हाँ। उसने कहा कि इसकी कीमत क्या लेगा। मैंने कहा कि पच्चीस

रुपए। उसने कहा कि फिर मैं आखिरी बार कहता हूँ, तुझे बीस रुपया दूँगा। मैंने कहा कि ला दे। फिर मैंने बीस रुपए लेकर मुर्गी दे दी।

फिर मैं अपने दोस्तों के साथ घूमता रहा। फिर मैंने कहा कि चलो नोटबुक खरीद लेते हैं। मैंने पाँच रुपए की नोटबुक खरीदी। फिर मैं अपने दोस्तों के साथ घर गया। फिर मेरे भैया ने पूछा कि तूने मुर्गी कितने में बेची, तो मैंने कहा कि बीस रुपए में। मेरे भैया ने कहा कि तीस रुपए की मुर्गी बीस में ही दे आया। भैया ने मुझे दो चाँटे लगाए और कहा अब ऐसा कभी मत करना।

चित्र: अनाम, छठवीं, मुम्बई, महाराष्ट्र, जून 2012

चित्र: रिंकी, चौथी, भोपाल, मध्य प्रदेश, अप्रैल 2012

प्यार

विष्णु कुमार मांझी
खेम भटकन, परिवर्तन सेंटर
सिवान, बिहार
मार्च 2017

प्यार से अच्छी कोई चीज़ नहीं, ऐसा मुझे लगता है। प्यार है तो हम सब हैं। प्यार नहीं तो कुछ नहीं। जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को कुछ लाने या ले जाने को कहता तो प्यार से। अगर हमें किसी से कुछ पूछना हो तो प्यार से। अगर हम ये सब प्यार से नहीं करें तो हम कुछ कर नहीं पाएँ। अब हमारे घर में ही देखिए। अगर मेरी माँ या बहन मुझे कुछ काम करने को बोलते हैं, तो अच्छे-से जब नहीं बोलते तो हम उस काम को नहीं करते और वही काम प्यार से बोलते हैं, तो हम कर देते हैं।

दोस्त

पंकज चौरे
नौवीं, सिलपटी, शाहपुर
बैतूल, मध्य प्रदेश
अप्रैल 2013

एक लड़की घूमने जा रही थी। आज उसके पापा ने कहा था कि बेटी घूमने नहीं जाना, नहीं तो तुम बारिश में भीग जाओगी। और वो घूमने चली गई। और अचानक बारिश आ गई। लड़की ने छतरी खोल ली। वहीं से एक लड़का जा रहा था। लड़की ने देखा कि वह बारिश में भीग रहा था। लड़की ने उससे कहा, "तुम मेरी छतरी में आ जाओ।" फिर लड़का छतरी में आ गया। फिर वह धीरे-धीरे दोस्त बन गए।

चित्र: अमृता यादव, पहली, भोपाल, मध्य प्रदेश, जून 2008

पापा जब बच्चे थे तब वे गाँव में रहते थे। वहाँ शिक्षा के ज़्यादा साधन नहीं थे। जब पापा पाँचवीं में थे तब जनगणना हो रही थी। पापा पढ़ने में तेज़ थे। इसलिए उनको तब पहली से पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाना पढ़ता था। क्योंकि तब पहली से पाँचवीं कक्षा तक का एक ही शिक्षक होता था और उसकी ड्यूटी जनगणना में लग गई थी। इस मौके का फायदा पापा भरपूर उठाते। कभी वे बच्चों के पीछे डण्डा लेकर दौड़ते, तो कभी किसी को डाँटा

पापा जब बच्चे थे...

ओम माकोड़े
आठवीं, देवास, मध्य प्रदेश
सितम्बर 2015

चित्र: नील, छह वर्ष, सवाई माधोपुर, राजस्थान, अप्रैल 2014

करते। उन्हें 5 किलोमीटर दूर एक कस्बे में पढ़ने जाना पड़ता था। पैदल। जब वे वहाँ से घर लौटते थे, तब वे थोड़ी शरारत कर लिया करते थे। वे घर लौटने वाली गायों को रोककर उनका दूध एक लोटे में भरकर पीने लगते थे। एक बार 8-9 साल की उम्र में पापा का एक्सीडेंट हो गया। वे साइकिल से पास के गाँव में जा रहे थे तो एक ट्रक उनकी साइकिल के ऊपर से गुज़र गया। लेकिन उन्होंने कभी दादाजी को नहीं बताया। आज भी पापा अपनी बातें किसी को नहीं बताते।

चित्र: रिया सोनी, पाँचवीं, उदयपुर, राजस्थान, जून-जुलाई 2017

पानी नहीं तो अनाज नहीं

सचिन रघुवंशी
सिमारा, पिपरिया, मध्य प्रदेश
अगस्त 2012

हमारे गाँव सिमारा में नहर नहीं छूट रही है तो गाँव के लोग फसलों में पानी नहीं दे पा रहे हैं। और बहुत परेशान हो रहे हैं। मज़दूर लोग भी परेशान हो रहे हैं क्योंकि अगर नहर छूट जाए तो मज़दूर लोग किसानों के खेतों में पानी दे देंगे। गाँव के गाय-बैलों को पानी अच्छे से नहीं मिल पाता तो गाँव के लोग खेतों में गाय-बैलों को चराने के लिए नहीं भेजते। अगर नहर जल्दी नहीं छूटी तो किसान लोगों को फसलों का नुकसान हो जाएगा। मज़दूर लोगों को काम नहीं मिलेगा और गाँव के लोग कुछ नहीं कर पाएँगे। इससे फिर अधिक अनाज भी पैदा नहीं होगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि जल्दी से जल्दी नहर छूट जाए।

चित्र: विवेक गौर, चौथी, भोपाल, मध्य प्रदेश, दिसम्बर 2011

चित्र: रोहित, छठवीं, दीपालया स्कूल, दिल्ली, मई 2010

मेरा नटखट भाई

श्रुति चौबे
तीसरी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
नवम्बर 1996

बात उस समय की है जब मेरा भाई ढाई साल का था। एक दिन मेरी माँ सब्ज़ी बनाने के लिए भिण्डी काट रही थीं। पास में बैठा मेरा भाई माँ को एक-एक भिण्डी पकड़ा रहा था। भिण्डी कट जाने पर भिण्डी के ऊपर का बेकार हिस्सा माँ ने कूड़ेदान में डाल दिया और हाथ धोने चली गईं। पलटकर जब माँ कटी हुई भिण्डी लेने आईं, तो वहाँ भिण्डी नहीं थी और बरतन खाली पड़ा था। माँ चारों ओर भिण्डी ढूँढ़ने लगीं। अचानक उनकी नज़र कूड़ेदान पर पड़ी और उन्होंने देखा, "अरे! भिण्डी तो कूड़े में पड़ी है।" माँ को गुस्सा आया और उन्होंने भाई को डाँटते हुए पूछा, "तुमने यहाँ भिण्डी क्यों डाली?"

मेरे भाई ने रोते हुए बड़े भोलेपन से जवाब दिया, "तुमने भी तो भिण्डी कूड़ेदान में डाली थी, इसलिए मैंने भी डाल दी।" उसका जवाब सुनकर माँ हँस पड़ीं।

चित्र: अखिलेश, पहली, मोरगढ़ी, मध्य प्रदेश, जुलाई 2014

चित्र: किम्या नेहरा, दूसरी, मुम्बई, महाराष्ट्र, मार्च 2012

★ गाना ★

एक आदमी साइकिल
चला रहा है टिप-टिप-
टिप-टिप बारिश हो रही है।
एक हात मे छाता है,
साईकिल चलाने मे
बड़ा मज़ा आता है।
फुर्र-फुर्र-फुर्र-फुर्र
चले साईकिल।

लालची राजा

करण
दूसरी, मुस्कान संस्था
भोपाल, मध्य प्रदेश
जनवरी 2018

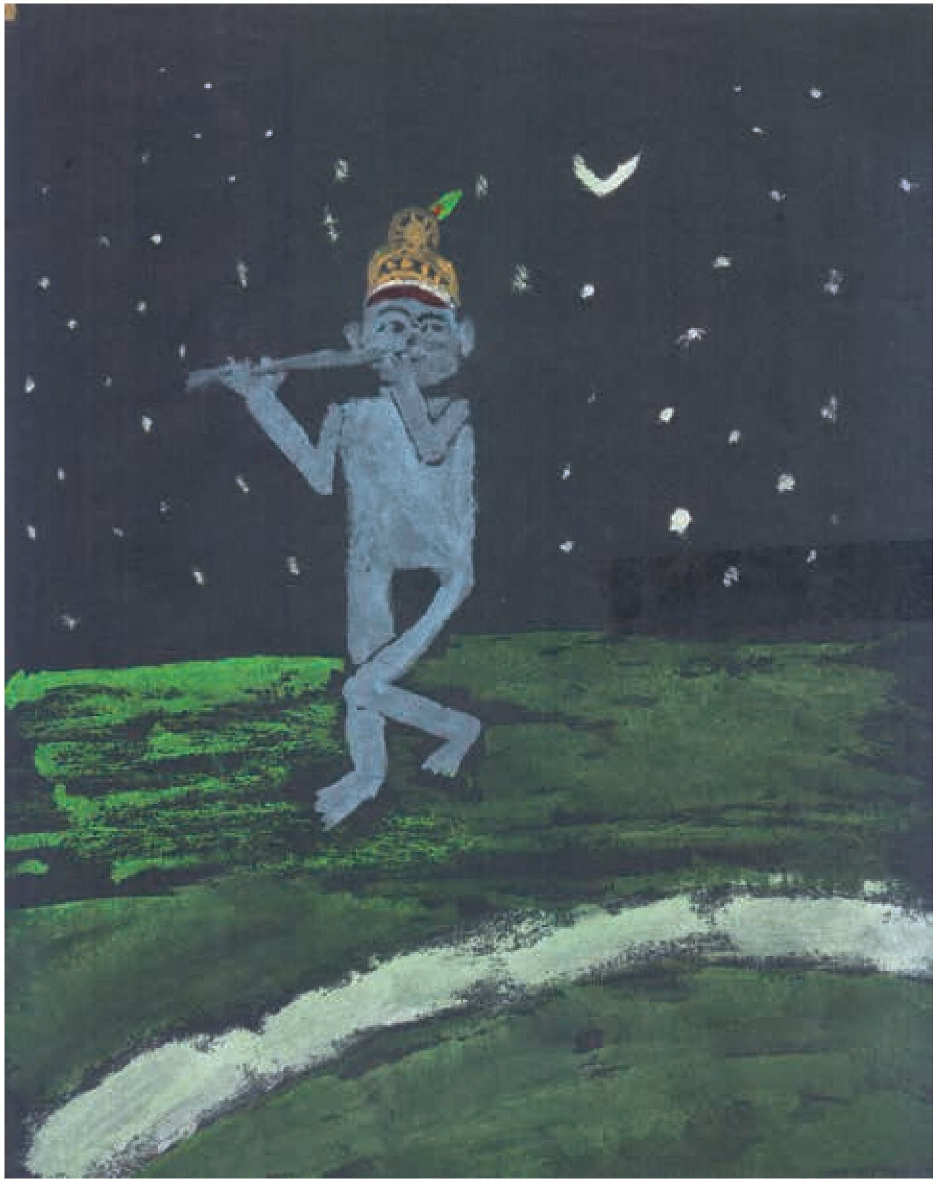

चित्र: प्रियव्रत सोनी, आठवीं, सागर, मध्य प्रदेश, फरवरी 2012

एक बार एक राजा ने लड्डू खाकर देखा। लड्डू बहुत स्वादिष्ट लगा। राजा ने लड्डू की दुकान को खरीदा। राजा को अच्छा लगा। राजा के सारे लड्डू खतम हो गए। राजा को गुस्सा आया। राजा ने शक्कर की छह बोरी मँगवाईं और लड्डू बनवाए। कोई को भी लड्डू बनाना नहीं आता था। राजा ने उस दुकानदार को बुलाया। दुकानदार लड्डू बनाने लगा। राजा ने इतने लड्डू खाए कि राजा को शुगर हो गया।

कन्या भोज

गिरजा बवाडिया
सातवीं, लिम्बोदा
देवास, मध्य प्रदेश
जुलाई 2012

एक बार मैं और मेरी सहेलियाँ लिम्बोदा गई थीं। हम सब कन्या भोज में गई थीं। वहाँ दूसरी जाति की लड़कियाँ भी थीं, तो परोसने वाले लोगों ने उन्हें पहले परोसा और हमें बाद में। उन्हें मेन जगह पर बिठाया और हमें बाहर मैदान में बिठाया। उन लड़कियों की थाली को उन लोगों ने उठाकर फेंका और जब हमने भोजन खाया तो उस थाली को हमें फेंकने को कहा। यह सब देखकर हमें बहुत बुरा लगा।

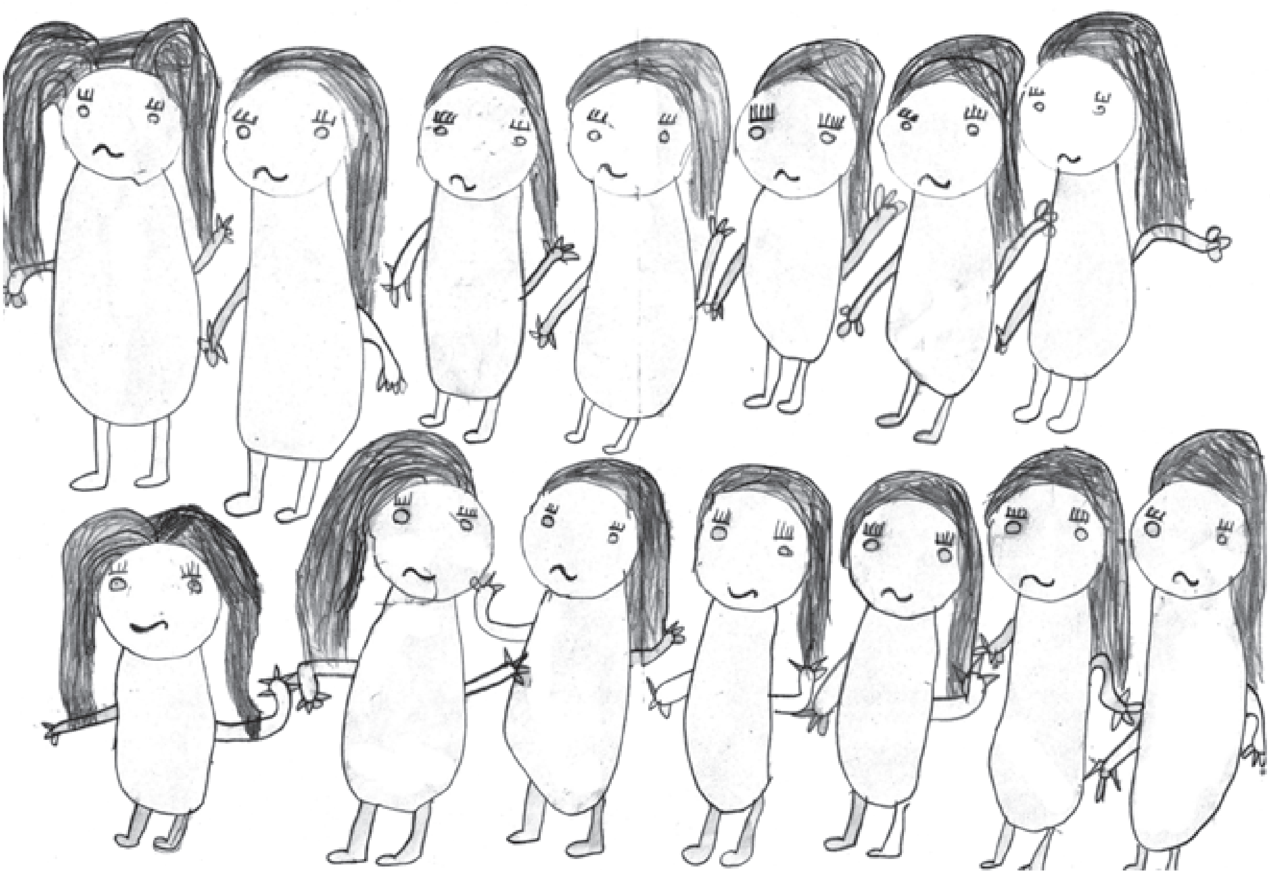

चित्र: शिवराज, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश, सितम्बर 2015

चित्र: आर्णव, चौथी, मंज़िल संस्था, दिल्ली, सितम्बर 2019

गानेवाला पेड़

सिमरन
चौथी, रा.प्रा. विद्यालय, गणेशपुर
उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड
अप्रैल 2015

एक अखरोट का पेड़ था। वह पेड़ जादू का पेड़ था। वह रोज़ गाना गाता था, "अ र र र र र र...।" सब उसका गाना मज़े-से सुनते थे। एक दिन वहाँ एक बुरा आदमी आया। वह पेड़ से बोला, "अरे पेड़! तुम इतना शोर मत मचाओ। तुम्हारे शोर से सारी दुनिया परेशान हो गई है।" अखरोट के पेड़ को यह बात बहुत बुरी लगती है। वह रोज़ के लिए चुप हो जाता है। जब लोगों को अखरोट के पेड़ का गाना नहीं सुनाई देता तो वे उसके पास जाते हैं और गाना सुनाने के लिए कहते हैं। पर वह पेड़ चुप ही रहता है। जब हवा चलती है तब उसकी पत्तियाँ गाना गाती हैं, "अ र र र र र र...।" लेकिन बहुत ही धीरे-धीरे। अब जिसको भी अखरोट की पत्तियों का गाना सुनना होता है, वह उस पेड़ के नीचे चला जाता है। क्या तुमने कभी किसी पेड़ का गाना सुना है?

काली को चढ़ा नशा

धर्मेन्द्र कुमार
आठवीं, सरसी, पटना, बिहार
फरवरी 1991

हमारे गाँव में एक दिन एक आदमी ने भाँग और दूध डालकर खोआ बनाया। उसने अपनी छोटी बहन को थोड़ा-सा खिला दिया। उसकी बहन का नाम काली थी। काली को बहुत अच्छा लगा। काली ने बाद में चुपके-से थोड़ा और खा लिया।

काली को नशा चढ़ गया और उसका सिर झूमने लगा। ओझा भगत को बुलाया गया कि काली पर भूत सवार है। भगत ने आकर बताया कि काली को बहुत बड़ा भूत धर लिया है।

काली ने हाथ से इशारा किया कि मैंने खोआ खा लिया है। ओझा ने कहा कि भूत मुर्गा माँग रहा है। एक ओझा से ठीक नहीं हुआ तो गाँव के दो ओझा और बुला लिए गए। ओझा आकर काली को बारी-बारी से रस्सी से मारने लगे। तभी एक समझदार आदमी ने तीनों ओझाओं को भगाया और काली को सुला दिया।

सुबह तक काली का नशा तो उतर गया लेकिन मार का दर्द हो रहा था। उसने बताया कि मैंने भाँग खा ली थी।

फिर गाँव के लोगों ने मिलकर तीनों ओझाओं को भगा दिया।

चित्र: शिवाली धोंडियाल, देहरादून, उत्तराखण्ड, जून 2008

चित्र: कोमल, गंगा नगर, राजस्थान, अप्रैल 2008

चित्र: प्रियांशी मालवीय, दूसरी, शाहपुर, मध्य प्रदेश, मार्च 2009

चित्र: सुहाना, दस वर्ष, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली, जुलाई 2018

दीदी

शीतल जुनेजा
छह वर्ष, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
दिसम्बर 1996

मेरी दीदी को बच्ची पैदा हुई। वो बीमार हो गई। उसके पैर में नील पड़ गई। फिर उसके घुटने में भी नील पड़ गई। फिर उसकी पीठ पर भी नील पड़ गई, तो पापा उसे डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने बोला कि इसको मेडिकल कॉलेज ले जाओ। उसका दो बोतल गन्दा खून निकला। उसको नया खून चढ़ाया। फिर दूसरा डॉक्टर आया और उसने बताया कि बच्ची मर गई। फिर हम और दीदी, दत्ता आंटी के घर रात को रुक गए। पापा सुबह आकर ले गए। सुबह पापा जब आए तो मम्मी और पापा रो रहे थे। दीदी खूब रोईं। चुप ही नहीं हो रही थीं।

दाल फोकट

पंकज कुमार पोरवाल
बालागुड़ा, मन्दसौर, मध्य प्रदेश
नवम्बर 1996

एक बार मैं और मेरा दोस्त रवि स्कूल जा रहे थे। एक दुकान पर लिखा था "चार रुपए पाव पूड़ी, दाल फोकट"। हमने सोचा जेब में तो फूटी कौड़ी नहीं है, पर दाल फोकट है। तो हमने दाल पी ली। जब मुनीम ने पैसे माँगे, तो हमने कहा कि हमने पूड़ी नहीं खाई। हमने तो दाल पी है और दाल फोकट है। उसने कहा कि पाव पूड़ी के साथ दाल फोकट है। हमने सोचा अब तो फँस गए। फिर उसने रवि को पकड़ लिया और मुझसे कहा कि घर जा और चार रुपए लेकर आ, नहीं तो रवि को नहीं छोड़ेंगे। मैं घर गया और चार रुपए लिए और मुनीम को दे दिए। और हमने पाव पूड़ी भी ले ली और हम उसके बाद कभी उस दुकान पर नहीं गए। ☆

चित्र: विपुल नागर, पाँचवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश, मई 2019

कुटेल गद्दा

आवेग उपाध्याय
तीसरी, देवास, मध्य प्रदेश
जुलाई 1990

चित्रः रोहन, आठ वर्ष, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बेंगलुरु, कर्नाटका, नवम्बर 2019

एक दिन की बात है कि मैंने साइकिल में आलपिन चुभाई। फिर पापा ने साइकिल देखी। फिर मुझसे पूछा और मैंने झूठ बोला। फिर पापा ने मुझसे कबूल करवाया, तब जाकर मैं सच बोला। मैंने फिर ऐसा ही किया और फिर पापा ने मुझे पीटा। फिर कहीं जाकर मैंने साइकिल का पीछा छोड़ा।

इसके कुछ दिन बाद घर में नया सोफा आया। अब थोड़े दिन में मैंने सोफा काटा और फिर पापा ने देखा तो मुझे पीटा।

इस तरह मैं 'कुटेल गद्दा' बनता जा रहा था।

हमारी कान्हा यात्रा

वेद लाड
सातवीं, दिल्ली
मई 2009

मैं अपने भाई और दादाजी के साथ कान्हा गया था। हम 22 मार्च को भोपाल से निकले। कान्हा भोपाल से पाँच सौ किलोमीटर दूर है। हम कार से गए थे। कान्हा पहुँचने में पूरा दिन लग गया। जमाना पहुँचे तो 8 बज चुके थे। जब मेरे दादाजी एक अंकल से बात कर रहे थे तो मैं और मेरा भाई रात में ही घूमने चले गए। पहले हमने एक खरगोश देखा। उसके बाद जंगली भैंसों का और चीतल का झुण्ड देखा। फिर हम गाँव में वापस आ गए।

अगले दिन हमने फोटो खींचे। हमने बारहसिंघा का झुण्ड देखा और सड़क के नज़दीक बैठी बिल्ली को देखा। चीतल फूल खाने में लगे हुए थे, जो बन्दरों की उछल-कूद के कारण गिर गए थे। एक पेड़ पर एक कोयल गीत गा रही थी। हमने एक मादा जंगली भैंसा और उसके बच्चों की फोटो ले ली। दो अलग-अलग प्रजातियों के गिद्ध भी देखें। एक मोर ने भी हमारा रास्ता काटा।

दोपहर में हम बांधवगढ़ गए। वहाँ घास का मैदान है, लेकिन रेगिस्तान जैसा। जानवरों

का कोई नामोंनिशान नहीं। जब हम वहाँ से वापस लौट रहे थे तो रास्ते में हमें एक बाघ मिला। वह सड़क पर टहल रहा था। हमने उसका पीछा करना शुरू किया। उसे बुरा नहीं लगा कि कोई चीज़ पीछा कर रही है। हम उसके बाजू से तस्वीर लेना चाहते थे। हमने ड्राइवर से कहा कि वह गाड़ी को उसके थोड़ा पास ले जाए। बाघ दाईं ओर हट गया, जैसे हमें साइड दे रहा हो। फिर वह रुका, जैसे कह रहा हो कि मैंने तुम्हें साइड दे दी है ना, अब जाओ। लेकिन हम नहीं गए। ऐसा दो बार हुआ। फिर वह बाईं तरफ गया, जैसे बोल रहा हो कि अब तुम जा सकते हो। फिर वह जंगल में चला गया। हम उसे 7 मिनट तक देखते रहे।

अगली सुबह हमने शरावन्तन में बारहसिंघा देखा और सुप्खर गए। सुप्खर के रास्ते में हमने एक बाघिन देखी घने जंगल में। सुप्खर में ब्रिटिश सरकार ने 1910 में एक विश्राम घर बनाया था। यह 100 साल पुराना है। इसकी छत खस की बनी है। हमने उसके सामने कैम्प फायर किया जब बारिश हो रही थी। अगले दिन हमने हनी बंजार्ड का जोड़ा देखा। हम उसकी फोटो ले पाते, उससे पहले ही वह उड़ गए। उसी दिन जब हम कटनी पहुँचे तो एक बन्दर व उसका बच्चा देखा। यह कान्हा में हमारा आखिरी दिन था। अगले दिन हम भोपाल वापस आ गए।

चित्र: ईशान निगम, आठवीं, भोपाल, मध्य प्रदेश, नवम्बर 2013

आम के भूत

अंकेश पटेल
तीसरी, खड्डा, शहडोल, मध्य प्रदेश
नवम्बर 1996

हमारे गाँव के पास ही ऊँची-ऊँची डालियों वाले आम के पेड़ों का बगीचा है। आम के मौसम में दिन भर हमारे जैसे लड़कों की भीड़ बगीचे में लगी रहती है। गाँव के सयाने लोग दिन भर काम में लगे रहने के बाद रात को प्रकाश लेकर आम बीनने जाते हैं।

एक दिन मैं भी रात को अपने पापा के साथ बगीचे गया। वहाँ बहुत-से लोग प्रकाश लेकर पके आम ढूँढ़ रहे थे। अचानक भयानक आवाज़ के साथ ज़ोर-ज़ोर से आम की किसी डाली के हिलने की आवाज़ आई। सभी लोग डर गए और भूत के भय के कारण आवाज़ को भूत समझकर बगीचे से भागने लगे। पूरे गाँव में बगीचे के भूत का शोर फैल गया। कुछ लोग चौराहे पर भूत की चर्चा कर रहे थे, तभी एक आदमी सिर पर आम से भरी टोकरी लिए अपने घर की तरफ जा रहा था। लोगों ने उसे पकड़ लिया। उसे डराने-धमकाने लगे। वह आदमी डर गया और बोला कि मैं ही भयानक आवाज़ के साथ ज़ोर-ज़ोर से आम की डाली हिलाता था, ताकि सभी लोग भूत के डर से चले जाएँ और मैं अकेले पूरे बगीचे का आम बीन सकूँ। अब मैं समझ गया कि भूत ऐसे होते हैं और मेरा भूत से भय हट गया।

चित्र: हेतांशी डी नायक, बाल भवन बड़ौदा, गुजरात, अक्टूबर 2016

कुएँ और घास की कहानी

रितु यादव
आठवीं, भोपाल, मध्य प्रदेश
नवम्बर 2010

एक बगीचा था। उसमें बहुत पुराना कुआँ था। वहाँ कुएँ में पानी फुल भरा रहता था। एक बार बहुत गर्मी पड़ी। कुएँ का आधा पानी सूख गया था। फिर एक दिन बहुत तेज़ बारिश आई। वह कुआँ भर गया। फिर कुएँ से पानी निकलने लगा और वहाँ घास पैदा हो गई। और कुआँ सोचने लगा कि यह मेरे चारों ओर कौन आ गया? वे एक-दूसरे से बिलकुल बात नहीं करते थे। एक दिन कुएँ पर एक कीड़ा चलता जा रहा था और उसे काट रहा था, तो घास ने अपना हाथ बढ़ाया और उस कीड़े को निकाल दिया। कुआँ और घास एक-दूसरे को देखकर मुस्कराने लगे।

बकरी और कुत्ता

संजयदास
छठवीं, शाहपुर, मध्य प्रदेश
दिसम्बर 2010

एक दिन मैं बकरी चराने गया था। एक कुत्ता गन्दा और लँगड़ा था। वो मेरी बकरी की पूँछ पकड़कर, घसीटकर पेड़ के नीचे ले गया और खाने लगा। तो मैंने उसे जब-जब मारा, तो वो मर गया। और मैं मेरी मरी हुई बकरी को लेकर घर चला आया।

चित्र: चिन्नुआ, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बेंगलुरू, कर्नाटका, जनवरी 2017

नर्मदा जी के किनारे रहते हम

तरुण, सातवीं और बबलेश, पाँचवीं
होशंगाबाद, मध्य प्रदेश
नवम्बर 2009

हम दो भाई हैं– तरुण और बबलेश। हम लोग होशंगाबाद में नर्मदाजी के किनारे रहते हैं। हमारे बड़े मज़े हैं – हम चुम्बक से नदी से पैसे पकड़ने जाते हैं। दौड़-दौड़कर जाते हैं। सबसे ज़्यादा पैसे हमको तब मिलते हैं जब दुर्गा जी को सिराया जाता है। साथ में बहुत सारे नारियल मिलते हैं और परसाद भी मिलता है। हम चुम्बक को गोल-गोल घुमाकर फेंकते हैं। एक-एक दान(बार) में बहुत सारे पैसे आते हैं। सूपे में कोई-से भगवान को सिराते हैं, तब भी खूब पैसे मिलते हैं।

हमारे घर में जब खाने के पैसे खतम हो जाते हैं, तब हम इसी पैसे में से सामान ले आते हैं। नारियल के लिए बहुत सारे जन कूदते हैं, कोई के भी हाथ आ जाता है।

लड़कियाँ किनारे पर खड़ी होती हैं। लोग बाग आते हैं और उन्हें पैसे देते हैं और टीका लगा देते हैं।

क्या इस समस्या का हल है?

रवि, राकेश, दौलत, सचिन, दिलीप, अनिल, सुनील और नितेश
इन्दिरा नगर बस्ती, भोपाल, मध्य प्रदेश
नवम्बर 2010

हमारी बस्ती में रोज़ पानी नहीं आता। एक दिन छोड़कर आता है। पानी की पूर्ति नहीं हो पाती। इस कारण रोज़ लड़ाइयाँ होती हैं। क्या इस समस्या का हल है? अगर है, तो कहाँ है?

चित्र: कृष हेगड़े, चौथी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, पटना, बिहार, जनवरी 2017

चित्र: योगेन्द्र, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड, अगस्त 2016

जब मेरे घर के सामने रोड बना

वेदान्त चाटे
तीसरी, मानकपुर
महाराष्ट्र
सितम्बर 2009

दो साल पहले मेरे घर के सामने का रोड बहुत खराब था। मुझको स्कूल जाने में बहुत तकलीफ होती थी। मेरा ऑटो वाला हमेशा किरकिर करता था। जब बारिश आती तो रोड पूरी कीचड़ से भर जाती थी। जब कोई भी मेरे घर आता तो बोलता कि रोड खराब है, तो मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं भगवान से बोलता कि मेरे घर का रोड बन जाए। मैं साइकिल भी नहीं चला पाता था। स्कूल जाते समय मेरे जूते कीचड़ से खराब हो जाते थे। जब मैं अपने नाना-नानी के घर गया और बाद में जब मैं घर वापस आया तो मैंने देखा कि डामर का रोड बन गया है। तो सब लोगों को अच्छा लगा और मैं भी साइकिल चलाने लगा और मेरा ऑटो वाला भी बहुत खुश हुआ। हम सब मोहल्ले वाले बहुत खुश हुए। हम सभी बच्चे बहुत खुश हुए। मैंने भगवान को धन्यवाद दिया। मुझे लगता है कि सभी मोहल्लों और गाँव में अच्छी सड़क बन जाए ताकि हम बच्चों को स्कूल जाने और साइकिल चलाने में परेशानी ना हो और हम सब बच्चे खुश रहें।

चाँद कीचड़ में

मेहा शर्मा पाठक
तीसरी, जयपुर, राजस्थान
अप्रैल 2014

एक दिन मैं रात में चाँद को देख रही थी। तभी मैंने देखा कि चाँद का रंग कुछ अजीब-सा था। तो, मैंने सोचा कि हो सकता है चाँद कीचड़ में गिर गया हो। तभी मेरे मन में एक खयाल आया कि क्यों ना एक कहानी बनाई जाए। मैंने कहानी का नाम 'चाँद कीचड़ में' रखा।

एक दिन चाँद खेल रहा था। तभी उसका पैर फिसल गया और वह कीचड़ में गिर गया। घर पर माँ ने उसे बहुत डाँटा। बोलीं, "कहाँ थे अब तक? और इतने गन्दे कैसे हो गए?"

चाँद बोला, "मैं खेल रहा था, पैर फिसल गया और मैं कीचड़ में गिर गया। पर चिन्ता मत करो। साफ हो जाऊँगा।"

माँ ने उसके कपड़े साफ कर दिए और मुस्कराकर बोली, "नहा लो।"

चाँद खुशी-खुशी नहाकर खेलने चला गया।

चित्र: सुमुखी, पाँचवीं, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र, अगस्त 2019

चित्र: विद्या कुमारी, छठवीं, एम.जी.हाई स्कूल, पटना, बिहार, दिसम्बर 2019

मरकने गुरुजी

शंकर ठाकुर
पाँचवीं, पलिया पिपरिया, मध्य प्रदेश
फरवरी 1989

हम स्कूल में कबड्डी खेल रहे थे। मैं कबड्डी खेलने के लिए गया था तो मुझे पटक दिया। मेरा पैंट गोबर में खप गया। तो मैं घर पर गया कपड़ा बदलने। घर से स्कूल आया। गुरुजी बोले, "तुम कहाँ गए थे?" तो मैंने कहा, "मैं कबड्डी खेल रहा था तो मेरे कपड़े गोबर में खराब हो गए। तो कपड़े बदलने गया था।" गुरुजी ने बहुत मारा और कहा, "तुम कहाँ गए थे?"

पहाड़ और औरत

महक
आठ वर्ष
सवाई माधोपुर, राजस्थान
दिसम्बर 2011

एक बार एक पहाड़ था। वह पहाड़ इधर-उधर घूमकर लोगों की फसल नष्ट कर देता था। लोग मर जाते थे। एक बार एक बुढ़िया का बेटा मर गया। बुढ़िया की फसल नष्ट हो चुकी थी। बुढ़िया और सारे लोग क्या खाते। सारे लोग भूखे थे। वह पहाड़ घरों को तोड़ देता। लोग कहाँ जाएँ, कहाँ सोएँ।

सारे लोग उदास हो गए। वह पहाड़ सारे पेड़ों को नीचे गिरा देता। सारे लोग पहाड़ से लड़ने लगे। पहाड़ उदास हो गया। उसने लोगों से माफी माँगी। उसने लोगों से कहा, "मुझे माफ कर दो, माफ कर दो।" लोगों ने कहा, "हम तुम्हें माफ नहीं करेंगे।" पहाड़ ने कहा, "माफ कर दो।" लोगों ने फिर कहा, "हम तुम्हें माफ नहीं करेंगे।" पहाड़ ने कहा, "अब से मैं ऐसा नहीं करूँगा।" उस दिन से पहाड़ एक ही जगह खड़े हो गए।

चित्र: विहान बिन्दल, दूसरी 'ब', द हेरिटेज स्कूल, रोहिणी, दिल्ली, जून 2019

मेरी नोटबुक

रौनक
अंकुर संस्था, दिल्ली
फरवरी 2008

चित्र: प्रीति, अक्टूबर 2008

हम कोलकाता शहर में रहते हैं। यहाँ रिक्शे ज़्यादा चलते हैं। हमारा छोटा-सा घर है। इसमें दो कमरे हैं। लकड़ी के पार्टिशन से बने। वहीं एक कोने में मम्मी की रसोई है जहाँ से उनकी चूड़ियों की आवाज़ जब-तब आती रहती है।

बाबा रिक्शा चलाते हैं जिससे उनके चेहरे पर 50 साल की उम्र में ही झुर्रियाँ आने लगी हैं। शरीर साँवला पड़ गया है। हाथ हैण्डिल को पकड़े-पकड़े सख्त हो गए हैं, जिनका एक चाँटा पड़ते ही इन्सान घूमता हुआ नज़र आता है। बाबा पूरा दिन रिक्शा चलाकर जितना भी पैसा कमाते हैं उससे घर का, भैया और मेरी पढ़ाई का सारा खर्च निकलता है।

जब कभी बाबा थकान महसूस करते हैं तो भी यह सोचकर रिक्शा चलाते हैं कि अगर मैं एक दिन भी रिक्शा नहीं चलाऊँगा तो घर का खर्चा कैसे चलेगा। उस दिन बाबा छुट्टी नहीं करते बल्कि शाम को जल्दी आ जाते हैं।

मम्मी, बाबा के पैसों को ध्यान से घर में खर्च करती हैं। कभी-कभी कुछ परेशान लगती हैं। उनकी सिकुड़ी भौंहें

यह कहती हैं कि कब तब घर यूँही चलेगा। अब तो उनके खिले चेहरे पर व आँखों के नीचे काले निशान आने लगे हैं।

भैया कॉलेज में पढ़ते हैं और मैं ग्यारहवीं कक्षा में। हमारी सुबह चिड़ियों के चहचहाने से होती है तथा रात चर्च के घण्टे से। भैया ज़्यादा लम्बे नहीं हैं पर कुछ भरे बदन के हैं। वो भी बाबा का बोझ कम करने के लिए पार्ट टाइम जॉब करते हैं, जिससे कम से कम अपनी पढ़ाई का खर्चा कुछ तो स्वयं उठा सकें। पर बाबा ज़्यादा से ज़्यादा मेहनत करके भैया को पढ़ाना चाहते हैं जिससे भैया के पैसे बच सकें और आगे काम आ जाएँ।

भैया ने कॉलेज में दाखिला लेने के बाद किताबें खरीद ली थीं, पर नोट्स बनाने के लिए कुछ भी नहीं था। इस समय उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि लिखने के लिए कुछ भी नहीं है, तो कॉपी कहाँ से लाएँ। उन्होंने कमरे में इधर-उधर देखा। तब उनकी नज़र अलमारी के ऊपरी हिस्से पर पड़ी जहाँ उनकी पुरानी कॉपियाँ पड़ी थीं। उन्होंने उन कॉपियों को उतारा और पलटकर देखा तो हर कॉपी में 8-10 पेज खाली मिले।

भैया ने उन पेजों को निकाला व उन्हें सुई-धागे से सिलकर अपनी नई कॉपी बना ली। पहले पन्ने को उन्होंने खूबसूरती से अपना नाम लिखकर सजाया। फिर मुझे आवाज़ लगाई, "रौनक..... रौनक.....।"

मैं मम्मी के साथ सब्ज़ी कटवा रहा था। भैया की आवाज़ सुनकर उनके पास गया। भैया बोले, "देख कैसी लग रही है?" मैं उनके हाथ की कॉपी को अपने हाथ में लेकर बोला, "भैया बहुत अच्छी है, कहाँ से ली?" भैया बोले, "मैंने पुराने पन्नों को सजाकर बनाई है।" मैं भैया की इस नई कॉपी को हाथ में लेकर देखता रहा। कॉपी बहुत अच्छी लग रही थी।

भैया का यह तरीका मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने भी इस तरीके को अपनाने का सोचा। अगर मैं भी भैया की तरह पुराने पन्नों से कॉपी बना लूँ तो बाबा के पैसे बच जाएँगे। यही सोचते-सोचते मैं मम्मी के साथ फिर से सब्ज़ी कटवाने लग गया।

इज़्ज़त

रणवीर गुर्जर
बारह वर्ष, बोदल
सवाई माधोपुर, राजस्थान
दिसम्बर 2013

जब मैं कक्षा 3 में पढ़ता था तब मैं पढ़ने कम ही जाता था क्योंकि मेरे रुखसाना मैडम देती (मारती) थीं। एक दिन मैं स्कूल नहीं गया। बच्चे मुझे बुलाने आए लेकिन मैं फिर भी नहीं गया। अगले दिन पढ़ने गया तो मुझे मैडम ने बुलाया। मैं काँपने लगा। मैडम ने कहा, “मुर्गा बन जा।” मैंने काँपते हुए कहा, “मैडम, मैं तो लड़का हूँ। मैं मुर्गा कैसे बनूँगा?” मैडम ने मेरे दो थप्पड़ मारे और कहा, “मुझसे उलटा बोलता है?” इतने में ही रेस्ट हो गई। रेस्ट के बाद मैं पढ़ने नहीं आया तो मैडम मेरे घर ही आ गईं। मेरे घर पर कोई नहीं था। मैडम मेरे देती-देती (मारती-मारती) स्कूल में ले आईं। मुझे गाँव में इतनी शर्म आई कि मेरे मन में आया कि मैडम के मार दूँ। लेकिन मैं क्या करता। मैं मैडम के मार नहीं सकता था। मैं कक्षा में बैठ गया। तभी स्कूल में कलेक्टर आया। मैडम स्वेटर बुन रही थीं। मैंने मैडम से कहा, “अब इससे कह दूँ कि मैडम मुझे मारती हैं।” मैडम बोलीं, “आज के बाद तेरे नहीं मारूँगी।” मैंने मैडम की इज़्ज़त बचाई। लेकिन मैडम ने मेरी इज़्ज़त नहीं करी।

चित्र: अभिषेक, दूसरी, इधा फाउण्डेशन, गुरुग्राम, हरयाणा, सितम्बर 2019

मेरा दोस्त गुलमोहर

देवांशी जैन
चौथी, दिल्ली पब्लिक स्कूल
लुधियाना, पंजाब
मई 2016

ये कहानी चुनमुन की है। चुनमुन अपने माता-पिता के साथ गुजरात के एक छोटे-से शहर में रहती है। वह चौथी में पढ़ती है। उसके पिता इंजीनियर हैं और माँ चित्रकार हैं। वह रोज़ बस से स्कूल जाती थी। उसके स्टॉप पर एक बड़ा ही सुन्दर गुलमोहर का पेड़ था। चुनमुन रोज़ बस की प्रतिक्षा करते वक्त गुलमोहर के पेड़ पर बैठ जाती थी। यहाँ बैठना उसे इतना अच्छा लगता था कि बस आने से पहले ही वह स्टॉप पर आ जाया करती थी। वह पेड़ उसका दोस्त बन गया था। और उस पर रहने वाले पक्षी और गिलहरियाँ भी। उसे उस पेड़ से बहुत लगाव हो गया था।

एक बार चुनमुन कुछ दिनों के लिए अपनी नानी के घर गई। जब वह वापिस आई तो यह देख हैरान रह गई कि उसका प्यारा गुलमोहर वहाँ नहीं था। किसी ने उसे काट दिया था। अब सिर्फ उसका ठूँठ रह गया था। चुनमुन इतनी उदास हो गई कि वह कई दिनों तक स्कूल नहीं गई।

माता-पिता के समझाने पर वह स्कूल जाने लगी। पर अब वह पहले की तरह बस में नहीं साइकिल में स्कूल जाती। जिस जगह उसका गुलमोहर था उसने उस रस्ते से जाना भी छोड़ दिया था।

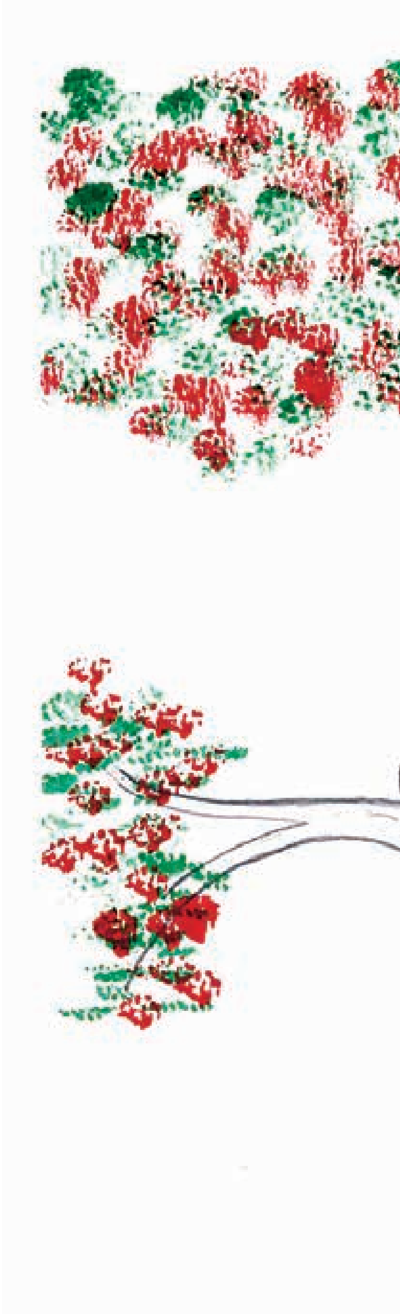

चित्र: देवांशी जैन
चौथी, दिल्ली पब्लिक स्कूल
लुधियाना, पंजाब
मई 2016

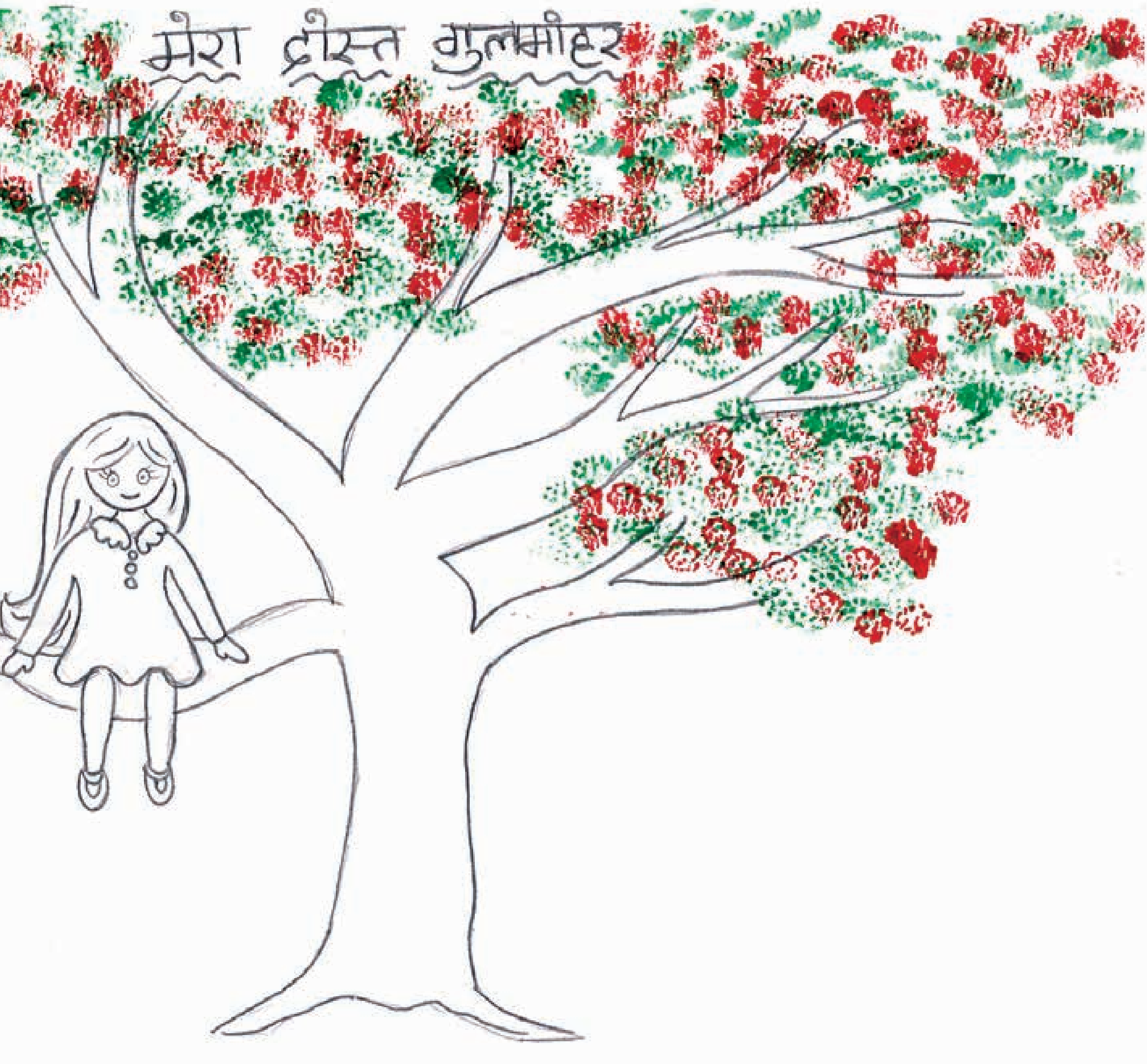

उसके माता-पिता को उसकी चिन्ता होने लगी। उसकी माँ ने उसे एक सुन्दर पेंटिंग बनाकर दी। गुलमोहर के पेड़ की। पेंटिंग देखकर चुनमुन एक पल के लिए खुश हो गई। पर अगले ही पल वह उदास हो गई।

चुनमुन के नौवें जन्मदिन पर उसके माता-पिता ने उसे गुलमोहर के नौ पौधे दिए। उन तीनों ने मिलकर अपनी गली में नौ गुलमोहर लगाए। आज वे बड़े हो गए हैं और चुनमुन की गली गुलमोहर से महक उठी है।

वो हमारे क्या लगते हैं?

बीहू
ग्यारह वर्ष, भोपाल, मध्य प्रदेश
मई 2016

बहुत दुख होता है जब फसल खराब हो जाती है, जब किसान इस वजह से फाँसी लगा लेते हैं। पर लोग कहते हैं कि अपन को क्या। आज एक ने लगाई है फाँसी, कल दो लगाएँगे। हम कहाँ तक रोकेंगे? क्या हम हर गाँव में जाएँगे और कहेंगे आप फाँसी मत लगाना। वो हमारे लगते क्या हैं– चाचा, मामा, दादा?

हाँ, वो हमारे तो कुछ नहीं लगते, पर मेरे लगते हैं कुछ। एक किसान जो हमें खाना देता है, वह फाँसी लगा ले तो कोई बड़ी बात ही होगी। उसकी फसल खराब हो गई है। हम जब किचन गार्डनिंग करते हैं और उसमें कुछ खराब हो जाता है तो हमें दुख होता है, हम रोने लगते हैं। पर उस किसान की तो फसल खराब हुई है। अगर एक किसान फाँसी लगाता है जो घर में अकेला कमाकर लाता हो तो घर कैसे चलेगा? हमारे पास दाल, चावल, गेहूँ, ज्वार, बाजरा जैसी चीज़ें कैसे आएँगी?

अब बताओ, वह अब भी तुम्हारे कुछ नहीं लगते?

चित्र: रेवा टंडन, चौथी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र, जनवरी 2017

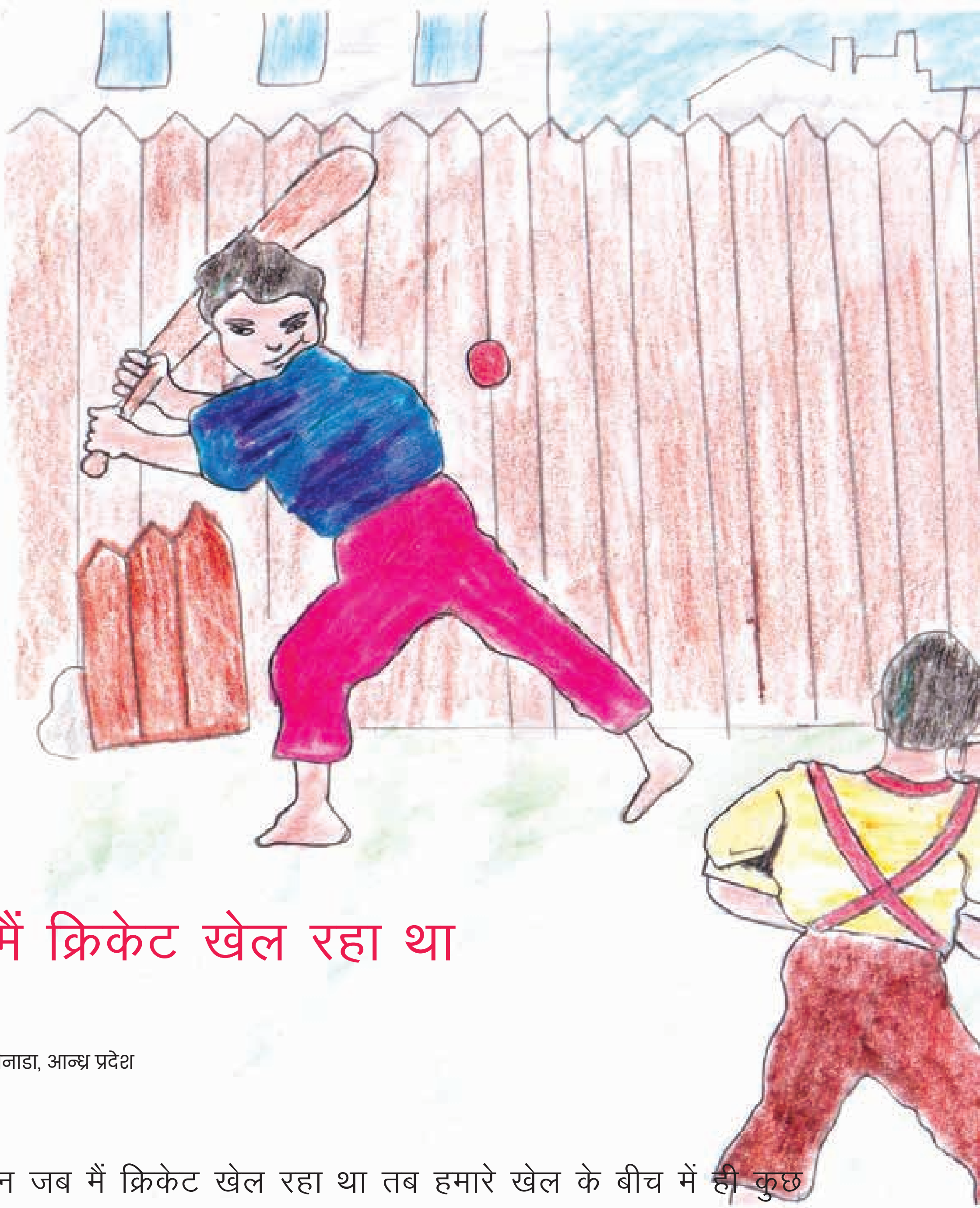

जब मैं क्रिकेट खेल रहा था

दीपंकर लोंढे
पाँचवीं, काकीनाडा, आन्ध्र प्रदेश
मई 2009

एक दिन जब मैं क्रिकेट खेल रहा था तब हमारे खेल के बीच में ही कुछ आवाज़ आई। आवाज़ एक ऑफिस से आई। कोई तो भी बोल रहा था कि इस ऑफिस में बार-बार आपकी बॉल आ रही है। हम सबने बोला कि ठीक है, अब फिर से बॉल नहीं आएगी। कुछ देर बाद फिर से वही आवाज़ पास से आई। हम सब ने पीछे मुड़कर देखा तो एक दारू पिया हुआ जैसा आदमी आया। मेरे मित्र का वॉचमैन उसे भगा रहा था। उसने कहा कि कोई भी टूर्नामेंट काकीनाडा में हुआ हो तो इन सबको ही हमारी टीम को जिताना है।

चित्र: तुषार भाटिया, सातवीं
अग्रसेन विद्यालय, इन्दौर
मध्य प्रदेश, नवम्बर 2019

वॉचमैन मान नहीं रहा था। तब उस दारूकुट्टे ने हम से बैट माँगा। हमें पता नहीं था कि वह दारूकुट्टा है। वह हमें गालियाँ दे रहा था। वह बोला कि मैं बॉलिंग करूँगा। हमने उसे बॉल दे दी। उसने बोला कि उसकी बॉल पर कोई रन नहीं बना सकता। पर उसने बॉल डाली और छक्का चला गया। वह बोला कि और दो बॉल डालने पर चला जाएगा। बॉल डालने से पहले उसने एक तेलुगु गाना बोला, 'कोड़ते कोतालिश सिक्सु कोटा ली' और उसने बॉल डाली। वह बॉल सीधी जाकर नाली में गिरी। हमें बहुत गुस्सा आया। मेरे एक दोस्त ने नाली में से बॉल निकालकर, धोकर पॉकेट में रख लिया और बोला अब बॉल चली गई है। अब तुम्हें ही खरीदकर लाना पड़ेगा। वह मेरे दोस्त का बैट लेकर जा रहा था। मेरे दोस्त ने भी उसकी चप्पल लेकर फेंक दी। उसे पता नहीं था। फिर उस दारूकुट्टे ने बोला कि मैं यहाँ से किसी की भी चप्पल लेकर जाऊँगा। किसी ने तो भी उसकी चप्पल लौटा दी। फिर उसने उसके पॉकेट से दारू की बोतल निकाली और बोला किसी को भी पीना है, तो पी लो। हम सब गेट के अन्दर चले गए। उतने में ही मेरे दोस्त के पापा आए और उसे जाने को बोले। तो भी वह कुछ-कुछ बोलकर चला गया।

चित्र: गार्गी शिंगणे. दस वर्ष, सेंट जोसेफ को-एड स्कूल, भोपाल, मध्य प्रदेश, जून 2016

चप्पल का पेड़

आशीष कुमार शर्मा
नौवीं, बलिया, मध्य प्रदेश
जून 1996

मैंने बचपन में सुना था कि मनीप्लांट पैसे देता है लेकिन आज तक मैंने नहीं देखा। मगर आज चप्पल का पेड़ देख लिया। यह चप्पल का पेड़ ऐसा है कि रोज़ सुबह को आता है और हर शाम को खतम भी हो जाता है।

जो फुटपाथ पर चप्पल बेचते हैं वो रोज़ सुबह पेड़ पर चप्पल टाँग देते हैं। दिन भर बेचते हैं और शाम को घर चले जाते हैं। इसी को 'चप्पल का पेड़' कहते हैं।

रहने दीजिए

विजय बड़गुजर
देवास, मध्य प्रदेश
अगस्त 2003

मैं बस स्टॉप पर खड़ा था। वहाँ पर एक फलों से भरा ठेला खड़ा था। उसी के पास उस ठेले का मालिक खड़ा था। कुछ देर बाद एक बूढ़ी महिला वहाँ आई। उसने ठेले के मालिक से ठेले के कोने में पड़ा एक सड़ा-सा फल माँगा। मगर उस आदमी ने उसे वहाँ से भगा दिया। वह महिला बेचारी वहाँ से चली गई।

कुछ देर बाद एक हवलदार वहाँ आया। बहुत सारे फल तुलवाए और पैक करने के बाद उस आदमी से बोला, “ए, पैसे दूँ?”

वह आदमी बोला, “अरे! कोई बात नहीं। रहने दीजिए।”

चित्र: ज़ोया, छह वर्ष, मिराम्बिका, दिल्ली, जून 2016

चित्र: गार्गी कोलपकर, छठवीं, आर्यन्स वर्ल्डस स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र, जून 2016

एक बार की बात

शिवानी उनाकर
सात वर्ष
जून 2009

एक बार की बात है। मैं अपने रिश्तेदार के साथ एक जगह गया। फिर हम जंगल में पहुँच गए और हमने एक घर देखा। हम गेट के पास गए। वहाँ एक चौकीदार था। उसने कहा कि अन्दर भूत है। हम डर गए। फिर जब चौकीदार सो गया तो हम अन्दर गए और भूतों से मिले। कुछ भूत बहुत मज़ेदार थे और कुछ शरारती थे। कुछ तो हमारे दोस्त बन गए। और हमने बहुत मज़े किए।

चूहा, शेर और भूत

खुशी
पहली, जयपुर, राजस्थान
मई 2009

चित्र: शिवांगी, पाँचवीं, धामीखेड़ा, उत्तर प्रदेश, मार्च 2012

एक जंगल था। बहुत बड़ा था। उसमें घर था। उस घर में एक चिड़िया और एक शेर रहते थे। शेर ने चिड़िया से कहा "अपना गेट बन्द कर लेते हैं। भूत आ जाएगा।" भूत आ गया। लेकिन चुहिया और शेर तो सो गए थे। फिर वहाँ एक जानवर आया। भूत उससे डरने लगा। जानवर को देखकर भागने लगा और भाग गया।

चित्र: कमलेश, छठवीं, भालावाग, हिमाचल प्रदेश, मई 2015

हिम्मत मत हारो

रिणु बावकर
होशंगाबाद, मध्य प्रदेश
अगस्त 2009

मैं जन्म से दोनों पैरों से विकलांग थी। मेरे को हर कोई पूछते थे, "इसको पोलियो हुआ है क्या...?" बहुत चलने पर मैं गिर पड़ती थी। ऐसे ही मैं 12 साल की हो गई। मेरे मम्मी-पापा ने सभी इलाज करवाएँ, मगर पैसों के कारण ऑपरेशन के लिए तैयार नहीं हुए। इसी प्रकार मैं के.जी. 1 से सातवीं तक पहुँच गई। स्कूल में सभी लोग मेरी देखरेख करते थे। मम्मी-पापा ने सोचा कि अपन गरीब हैं, इतना रुपया कहाँ से लाएँगे। जिस तरह से चल रहा है, वैसे ही ठीक है। मगर एक दिन मेरी ज़िन्दगी में फूल की तरह आया। मैं होशंगाबाद में रहती हूँ। यहाँ पर ज़िला पुनर्वास केन्द्र है। उसमें मेरा रजिस्ट्रेशन हुआ था। वहाँ पर अचानक नारायण सेवा संस्था, उदयपुर द्वारा एक शिविर का आयोजन किया गया। होशंगाबाद शहर के आजू-बाजू के सभी लोगों का मुफ्त इलाज किया गया और 6 बच्चों का ऑपरेशन के लिए नम्बर लगा।

इनमें मेरा नाम भी शामिल था। मैं बहुत खुश हुई, मगर हमारे पापा तैयार नहीं थे। सभी लोगों ने समझाया कि आपकी बेटी अच्छे-से चलने लगेगी, आप लेकर आओ। उन्होंने मुझे एक लैटर दिया और मैं तैयारी करके मम्मी के साथ राजस्थान पहुँची, 10 मई 2007 को। 14 मई 2007 को मेरा ऑपरेशन हुआ। कुछ दिन मेरे को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। इसी तरह दूसरे पाँव का भी ऑपरेशन हुआ, 13 जून 2007 को। छह-सात महीने में मैं थोड़ी अच्छी हुई। उसके बाद स्कूल जाने लगी और सातवीं की परीक्षा दी। अभी कक्षा आठवीं में हूँ। अभी मैं अपने पैरों पर खड़ी हूँ, अपने काम खुद कर सकती हूँ। आज मैं बहुत खुश हूँ और हमारे परिवार में खुशी का दिन आया। आज हम दोनों भाई-बहन बहुत खेलते रहते हैं। जीना है, तो हिम्मत ना हारो।

चित्र: महेन्द्र सैनी, बारह वर्ष, सवाई माधोपुर, राजस्थान, नवम्बर 2010

चित्र: राजन्य प्रजापति, दसवीं, केन्द्रीय विद्यालय, विदिशा, मध्य प्रदेश, मार्च 2015

मैदान की कहानी

नील
नौ वर्ष, सवाई माधोपुर, राजस्थान
मई 2016

हम हर रविवार को क्रिकेट खेलने जाते हैं। हमारे घर से मैं और दीदी। मेरे दोस्त सोनू औरों के घर से रामरेश भैया, निशा दीदी, मनीषा दीदी, सोनू और उनके रामहरि मामा। मेरी मम्मा और पापा भी हमारे साथ जाते हैं। मम्मा मैदान में साइकिल चलाना सीखती हैं और पापा हमारे साथ क्रिकेट खेलते हैं।

एक दिन हम क्रिकेट खेलने गए तो मैदान में एक छोटा-सा पिल्ला आ गया। वह हमारे मैदान में खेलने लग गया। बारिश का मौसम था। जैसे ही हम खेलने लगे तो बारिश आना शुरू हो गई। हम सब पेड़ों के नीचे छिप गए और पिल्ला झाड़ियों में छिप गया। फिर बारिश आना बन्द हो गई। पिल्ला भागकर गीली मिट्टी में लेटने लग गया। उसे गीला-गीला लग रहा था। मेरी मम्मा ने सोचा कि इसको गीली मिट्टी में मज़ा आ रहा है तो हम इसको गीली मिट्टी से ढँक देते हैं। मम्मा ने उसे पूरा ढँक दिया। बस उसकी आँख और नाक दिख रही थी। पिल्ला मज़े करते-करते ही सो गया। फिर जैसे ही पिल्ला तेज़ साँस लेने लगा तो मिट्टी पर दरार आना शुरू हो गई। पर पिल्ला उसमें लेटा रहा। हम क्रिकेट खेलते रहे। खेलकर हम घर जाने लगे तब भी पिल्ला उसी तरह मज़े-से लेटा रहा।

जब हम घर आ रहे थे तो रास्ते में दीदी की नज़र एक तितली पर पड़ी। दीदी ने देखा कि यह तितली तो फड़फड़ा रही है। दीदी ने कहा, “पापा, यह तितली इतना फड़फड़ा क्यों रही है?”

फिर सारे बच्चे और पापा तितली को देखने लगे। हमने गौर से देखा कि तितली के पंख को एक मकड़ी ने बहुत तेज़ पकड़ रखा है। मकड़ी तितली को छोड़ ही नहीं रही थी। फिर हमने सोचा हम इसको बचा लेते हैं। फिर रामरेश भैया ने विकेट से तितली का पंख दबाया और एक डण्डी से मकड़ी को हटा दिया। रामरेश भैया ने ऐसे हटाया कि दोनों को ही नुकसान ना हो। तितली थोड़ी देर तक ज़मीन पर पड़ी रही। फिर झटके-से उड़ गई। मकड़ी चलते-चलते घासों में चली गई।

पापा बोले, “वह तितली शायद मकड़ी का खाना थी। हमने मकड़ी को उसका खाना नहीं खाने दिया।”

अम्बुज जहाज की दास्तान

अनाम
जुलाई 2009

मेरा नाम अम्बुज है। वैसे मेरी क्लास में बच्चे मुझे अम्बुज जहाज कहते हैं। वो क्या है कि मेरा सरनेम झा है ना, इसलिए। मेरी बहन का नाम है– कृति। 1 महीने में एक करोड़ बार मेरी पिटाई होती है। थोड़ी ज़्यादा ही बार होती होगी।

पिटाई के कारण हैं– कृति से झगड़ा, कृति को चिढ़ाना, कम पढ़ाई करना, ज़्यादा देर टीवी देखना और आजकल चोरी से आम रस पीना।

पिटाई के साधन– रबर की चप्पल की पट्टियाँ (स्ट्रैप), अरे वही, जिनमें अपना पैर फँसता है और डण्डे तो हैं ही।

कहाँ-कहाँ होती है पिटाई– गाल, जाँघ का पिछला हिस्सा, पीठ और पोंद। पीठ पर पिटाई ज़रा कम लगती है। कई बार हलकी हो तो थोड़ा आराम भी महसूस होता है। पोंद की पिटाई में कभी-कभी चोट लग जाती है, तो मैं चुपचाप अकेले में जाकर क्रीम लगा लेता हूँ।

पापा कभी मैथिली में और कभी हिन्दी में गाली देते हैं या डाँटते हैं तो बुरा लगता है। अरे! सुनिए तो, मेरे नाम से मत देना, नहीं तो बदनामी तो होगी ही.... और मार पड़ जाएगी सो अलग। अच्छा ऐसा करना, मेरे नाम के बिना ही छाप देना। नाम से छापा तो आगे से कुछ नहीं लिखूँगा। अच्छा एक काम करो कि मेरा नाम अम्बुज कर देना और बहन का नाम कृति, ठीक है।

चित्र: मनराज मीणा, ग्यारह वर्ष, सवाई माधोपुर, राजस्थान, दिसम्बर 2018

चित्र: भवानी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़, जुलाई 2015

चित्र: फारिक आज़िम, दिल्ली, अगस्त 2019

कारहे में मछलियों की बाढ़

अप्तुषी मीनिन
सातवीं, वेकरो, अरुणाचल प्रदेश
सितम्बर-नवम्बर 2011

मैं अरुणाचल प्रदेश के लोहित ज़िले के एक बहुत ही ग्रामीण इलाके की रहने वाली हूँ। बरसात के दिनों में एक दिन मैं और मेरी दोस्त अरुनमयी एक छोटी-सी धारा के किनारे टहल रहे थे। मैंने देखा कि पानी बहुत ही गन्दा और मटमैले रंग का है।

अगले दिन मेरा भाई धारा के पास टहल रहा था। अचानक उसने देखा कि कई सारी मछलियाँ एक ओर से दूसरी ओर जा रही हैं। फिर उसे एक बड़ी-सी मछली दिखाई दी और वह ज़ोरों-से चिल्लाया, "अनु, देखो तो यह क्या है? यह मछली तो नहीं लग रही, पर उसके जैसी ही लग रही है।" फिर उसे और भी कई सारी मछलियाँ इधर-उधर जाती हुई दिखाई दीं।

उस रात बारिश नहीं हुई और वह धारा लगभग पूरी सूख गई। मेरा भाई जब सुबह में टहलने गया तो उसने कई सारी मछलियाँ पकड़ लीं और घर पहुँचकर खुशी-से चिल्लाया, "अप्टू, देख मैं क्या लाया हूँ। देख मछली देख।" वह खुशी से नाच-गा रहा था। वह अन्दर आया और उसने मछलियाँ एक प्लेट में रखीं।

अपने गाँव में इतनी बड़ी मछली को देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने अपने पड़ोसियों और परिवार वालों को इस बारे में बताया। उन्हें तो यकीन ही नहीं हुआ। वे बोले, "हमारे गाँव में ऐसी मछलियाँ नहीं मिलतीं। चलो, चलकर सारी मछलियाँ ले आते हैं।"

सूरज और घर

शारदा
दूसरी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश
मई 2009

एक घर था। वह बहुत प्यारा था। उसके लोगों ने उसे छोड़ दिया था। सूरज उसका दोस्त था। सूरज उसको सँभालता था। सूरज और घर साथ-साथ रहते थे। वह दोनों कभी कट्टी नहीं होते थे। सूरज को बहुत बुरा लगता कि घर अकेला है। एक दिन वहाँ कोई आ गया। वह वहाँ रहने लगा। सूरज बहुत खुश हुआ कि घर में कोई आ गया है। उसने सोचा कि अब घर अकेला नहीं है। और वह घर को प्यार से रखने लगा।

चित्र: त्विशा, आठ वर्ष, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बेंगलुरु, कर्नाटिका, सितम्बर 2019

चित्र: खुशबू साहू, आठवीं, शा. क. मा. शाला पोटियाडाह, मध्य प्रदेश, फरवरी 2015

चके का गुस्सा

ब्रजमोहन रघुवंशी
आठवीं, पिपरिया, मध्य प्रदेश
फरवरी 2012

एक बार मैं स्कूल जा रहा था। जाते-जाते दोनों साइकिल के चकों की लड़ाई हो गई। तो मैंने एक साइकिल के चके से बोला, “अरे भाई, क्यों लड़ाई कर रहे हो! मैं स्कूल को लेट हो रहा हूँ, मुझको सर मारेंगे।” दोनों साइकिल के चके गुस्सा गए। और फिर उन्होंने मेरी पिटाई कर दी। तो फिर मुझको भी गुस्सा आ गया और मैंने भी एक डण्डी तोड़ी और उन दोनों साइकिल के चकों से मुकाबला किया। तब वे दोनों मुझसे बोले, “तुम क्यों लड़ाई कर रहे हो? स्कूल को लेट नहीं हो रहे? अभी-अभी तो तुम हम दोनों को समझा रहे थे और अब खुद ही लड़ाई कर रहे हो?” “तो इसमें मेरा क्या कसूर? तुम खुद अचानक मुझ पर टूट पड़े तो मुझे भी गुस्सा आ गया और मैं भी तुम दोनों पर टूट पड़ा। अच्छा भैया, अब यह लड़ाई बन्द करो। भैया मेरे, मोहे स्कूल भी तो जाना है।” “हाँ-हाँ चलो।” इस तरह हम स्कूल आ गए।

चित्र: अभिनव गुप्ता, सात वर्ष, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, अक्टूबर 2008

शैतान फुग्गा

शिवानी
आठ वर्ष, जबलपुर, मध्य प्रदेश
अप्रैल 2014

एक दिन एक लड़की ने फुग्गा खरीदा। घर आकर उसने उस फुग्गे को फुलाया। जैसे ही उसने फुग्गे में गठान बाँधी और उसको छोड़ा तो वह फुग्गा शैतानी करने लगा। जल्दी से छूटकर लड़की के हाथों से दूर चला गया। यह देखकर लड़की रोने लगी तो फुग्गा भी रोने लगा। लड़की चुप तो फुग्गा चुप। लड़की बैठती तो फुग्गा बैठता। लड़की खड़ी तो फुग्गा खड़ा। लड़की दौड़ती तो फुग्गा दौड़ता। वह लड़की की नकल करता। थोड़ी देर में लड़की बहुत परेशान हो गई और सोचने लगी कि क्या करूँ। फिर वह दौड़ते हुए घर से बाहर भाग गई। जैसा उसने सोचा था फुग्गा भी दौड़ते-दौड़ते घर से बाहर भाग गया। पास ही एक पेड़ था। फुग्गा उसमें उलझ गया। अगली सुबह जब लड़की ने जाकर देखा तो वह फुग्गा एक समझदार चमगादड़ बन गया। लड़की उसे देखकर बहुत खुश थी।

मेरी कक्षा का पहला पीरियड

श्याम गुप्ता
छठवीं, अलवर, राजस्थान
जून 2013

मेरा नाम श्याम है। मैं केन्द्रीय विद्यालय की छठवीं क्लास में पढ़ता हूँ। आज मेरी क्लास में राहुल ने पैंट में सू-सू कर दी। हमारे स्कूल में फर्स्ट पीरियड में सू-सू करने नहीं भेजते। राहुल को बहुत तेज़ सू-सू आ रही थी लेकिन वो डर के कारण नहीं बोला। राहुल ने सोचा कि अगर वो टीचर से पूछेगा तो उसको मार लगेगी। मुझे अच्छा नहीं लगा। टीचर कोई तो स्कूल में आते ही टॉयलेट चले जाते हैं और कोई प्रेयर के बाद भी जाते हैं और बच्चों को मना करते हैं। हमें कहते हैं कि तुम तो घर से सू-सू करके आए हो। हम टीचर को यह बोलना चाहते हैं कि क्या आप बाहर से आए हो?

चित्र: अभ्यांश भटनागर, के. जी. 1, सागर पब्लिक स्कूल
भोपाल, मध्य प्रदेश, नवम्बर 2018

मेरा पहला अनुभव

अनाम, सितम्बर 2015

मैंने एक फूल को देखा और समझा। वह फूल एक बंजर ज़मीन में यूँ खड़ा था मानो वह अकेला, रुआँसा-सा किसी का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा हो। वह बेहद मुरझाया हुआ था। लेकिन बारिश की एक बूँद ने उसमें नई जान फूँक दी। वह खिल उठा और झूमने लगा। उसकी एक-एक पँखुड़ी खिल गई। मन्द-मन्द मुस्कराने लगी, लहराने लगी और जीवनदान देने के लिए बारिश की पहली बूँद का आभार प्रकट करने लगी।

चित्र: देवेश शर्मा, चार वर्ष, जोधपुर, राजस्थान, दिसम्बर 2010

चित्र: आकांक्षा खादटकर, दूसरी, आनन्द निकेतन स्कूल, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र, दिसम्बर 2015

माँ और कम्पनी

लकी, करण, सोमनाथ
दुर्गेश, मनीषा, दुर्गा
पाँचवीं, शहीद स्कूल, बीरगाँव
रायपुर, छत्तीसगढ़
दिसम्बर 2017

हमारी माँ लोग को कम्पनी वाले कम पैसा देते हैं। और हमारी माँ लोगों को कम पैसा बढ़ाते हैं। हमारी माँ छुट्टी माँगती हैं तो उनको छुट्टी नहीं मिलती है। कम्पनी में माँ लोग सेठ से उधारी लेते हैं। हमारे माँ लोग को पैसों की ज़रूरत होती है तो पैसे नहीं देते हैं। और देते हैं तो अगर माँ बोलती हैं कि इस महीना पैसा नहीं काटो तो कम्पनी के सर लोग फिर भी पैसे काट ही देते हैं। हमारे माँ लोग टाइम से कम्पनी नहीं आते हैं तो उनसे 10 या 20 रुपया लेते हैं। जब हमारे माँ लोग कम्पनी में बैठ जाते हैं तो कैमरा में देखते हैं। उनको ऑफिस में ले जाकर डाँटते हैं। जब बाहर के लोग कम्पनी में चेक करने आते हैं तो कम्पनी के सर माँ लोगों को छुपा देते हैं। ताकि उनको पता नहीं चले कि माँ लोग को कम पैसे देते हैं, बैठने को नहीं मिलता है और सुविधा भी नहीं मिलती है।

दो दोस्त

गौरव शास्त्री
चौथी, ऑर्किड स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र
नवम्बर 2009

एक बार दो दोस्त थे। उनके नाम थे– मोटू और ढँढू। दोनों बहुत अच्छे दोस्त हैं। एक बार मोटू ने ढँढू के लिए एक खिलौना खरीदा। ढँढू को बहुत खुशी हुई। उसने शुक्रिया कहा।

चित्र: अरीना गुप्ता, पहली, द हेरिटेज स्कूल, रोहिणी, दिल्ली, जनवरी 2019

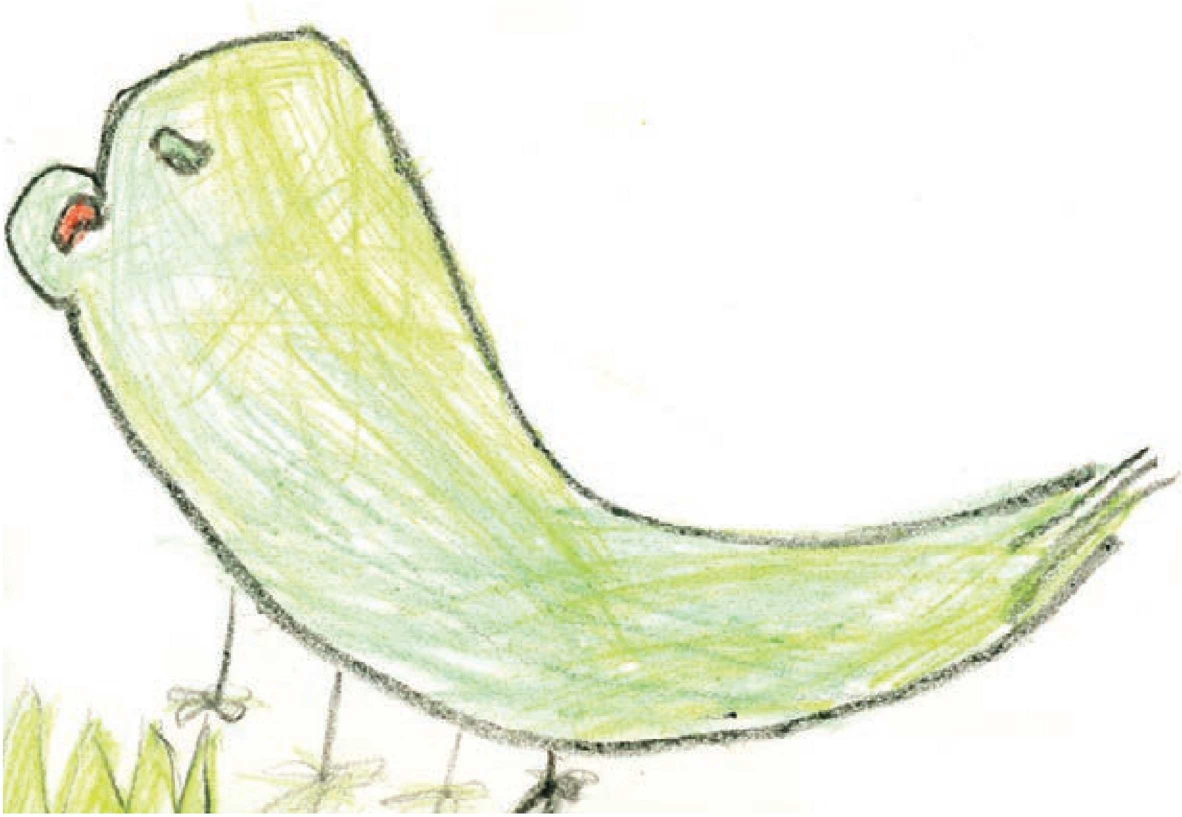

चित्र: विजय तेहलानी, भोपाल, मध्य प्रदेश, जून 2008

खरगोश और इल्ली

आरज़ू बारसे
पहली, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़
सितम्बर 2014

एक दिन खरगोश गाजर खाने गया। उस गाजर में एक इल्ली बैठी थी। खरगोश ने गाजर खा लिया। इल्ली बोली, "खरगोश भैया, खरगोश भैया।" खरगोश चारों तरफ घूमने लगा। खरगोश को चक्कर आ गया। खरगोश गिर गया। इल्ली बोली, "खरगोश भैया, गोल-गोल मत घूमो। मुझे भी चक्कर आ रहा है।" खरगोश बोला, "कौन है, सामने आओ। मैं तुझे कच्चा खा जाऊँगा।" इल्ली बोली, "खरगोश भैया, आप तो मुझे पहले से ही कच्चा खा चुके हो।"

हमारी गाय

कोमल लोहे
छठवीं, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक स्कूल
गोवारी, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र
सितम्बर 2019

हमारे घर पर एक गाय हुआ करती थी। वो बहुत अच्छी थी। किसी को भी नहीं मारती थी। दूध भी अच्छा देती थी। माँ उसका बेहद खयाल रखती थीं। उसका चारा-पानी करना, गोबर निकालना, कभी-कभी उसको नहलाना, सारे काम माँ ही करती थीं। दूध भी माँ ही निकालती थीं। मैं माँ के पीछे-पीछे रहती थी।

मुझे वो गाय बहुत पसन्द थी। उसे गर्दन के नीचे सहलाओ तो वो गर्दन हिलाती, आँखें बन्द कर शान्त हो जाती थी। शायद उसे भी मेरा प्यार करना पसन्द था।

एक बार उसे बछड़ा हुआ। 3-4 दिन ही हुए थे कि अचानक से वो मर गई। हम बहुत रोए। डॉक्टर के पास भी गए थे। लेकिन उसे भी शायद कुछ समझ नहीं आया था। उस रात मैंने और माँ ने खाना नहीं खाया।

किसी ने कहा, साँप ने काटा होगा तो किसी ने कुछ और कहा। हमारी समझ में भी कुछ नहीं आया।

माँ चार दिन तक दुखी थीं, नाराज़ थीं। गोठे की तरफ देखो तो सूना-सूना लग रहा था। अब हमारे घर में गाय नहीं है।

चित्र: राजेश, विनोद, कैलाश, राजा, थांडला, झाबुआ, मध्य प्रदेश, फरवरी 2010

मेरे पापा की स्कूटर

सोनाली वाघमारे
ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक स्कूल
गोवारी, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र
सितम्बर 2019

मेरे पापा को लगा कि सभी लोग गाड़ी ले रहे हैं तो मैं क्यों पीछे रहूँ? तभी पापा ने एक पुरानी स्कूटर ली।

पापा बेहद खुश थे। उनसे रहा न गया। शाम होते ही वे गाड़ी निकालकर चल पड़े। और सारा गाँव घूमकर आने के बाद घर की पास वाली नाली में गिर पड़े।

यह नाली हमारे घर के एकदम पास है। वहाँ गाड़ी घुमाने के लिए ज़्यादा जगह नहीं है। पापा से नहीं हुआ और वे गिर पड़े।

पहले तो कौन गिर पड़ा, ये हम समझे ही नहीं। आवाज़ सुनकर देखने के लिए हम बाहर दौड़ पड़े।

वो स्कूटर तो पूरी तरह से कीचड़ से भर गई थी और साथ में हमारे पापा भी। "छि:, नहीं हैं ये हमारे पापा!"

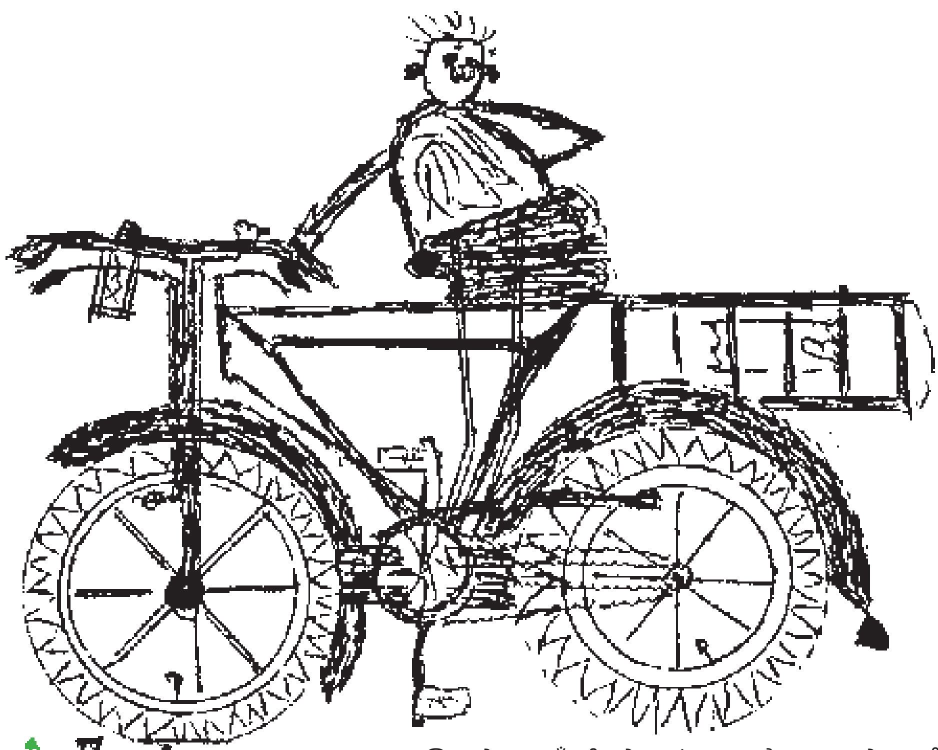

चित्र: गोपाल, पाँचवी , बोतलगंज, मन्दसौर , मध्य प्रदेश, मई 1991

ऐसा कहने को दिल चाहा। पर क्या करते? माँ ने पानी लाया, पापा को नहलाया। मुझसे कहा, "सोनू जा शैम्पू लेकर आ।" मैंने शैम्पू लाया। पापा ने शैम्पू से मुँह धोया, बचा हुआ शैम्पू बदन में लगाया। तब जाकर लगा, "हाँ, ये हमारे ही पापा हैं!"

रात को सोते वक्त खटिया पर लेटे-लेटे हम सब ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे थे। पापा भी हमारे साथ हँस रहे थे। ऐसा फैमिली ड्रामा हमारे घर रोज़ होता है। ☆

जम्बो हाथी

वैदेही पाटणे
दूसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान फलटण, सतारा, महाराष्ट्र
अक्टूबर 2019

मुझे एक हाथी पसन्द है।
उसका नाम है जम्बो।
मुझे जम्बो हाथी बहुत पसन्द है।
मैं उसके साथ खूब खेलती हूँ।
मुझे उसका रंग पसन्द है।
हम दोनों घूमने जाते हैं।
इसलिए मुझे वो पसन्द है।
जम्बो और मैं साथ में टीवी देखते हैं
और गाना गाते हैं। ☆

चित्र: सोनू मालवीय, चौथी, एस बी आश्रम, उज्जैन, मध्य प्रदेश, मार्च 2018

चित्र: रिद्धि गुप्ता, चौथी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, फरवरी 2019

महुआ की बिनाई

गिरिजा कुजूर
आठवीं, शा.उच्च.प्रा.शाला
बोईरमाल, महासमुन्द, छत्तीसगढ़
जून-जुलाई 2017

महुआ की बिनाई का काम मार्च से अप्रैल तक होता है। महुआ के पेड़ में फूल फागुन के दस-पन्द्रह दिन तक लग जाते हैं। शुरू में महुआ ज़्यादा गिरता है। बाद में कम होने लगता है। हमारे महुआ के दो पेड़ हैं। इनसे हर दिन चार किलो महुआ गिरता है। यदि महुआ के पेड़ में फूल लग चुके हैं और पानी गिर जाए, तो सारे फूल झड़ जाते हैं। इससे महुआ कम गिरने लगता है। इससे बिनने वालों को नुकसान हो सकता है। महुआ बिनने का काम सुबह पाँच बजे से दोपहर बारह बजे तक होता है। यदि किसी के पास महुआ के कई पेड़ हों तो सुबह के पाँच बजे से शाम के चार भी बज जाते हैं। महुआ को तुरन्त लाकर नहीं बेचा जाता। लाकर, पहले उसे सुखाया जाता है। जब पूरी तरह से सूख जाता है तब उसे व्यापारी के पास बेचा जाता है। मैं हर रविवार को महुआ बिनने जाती हूँ। अभी तो महुआ थोड़ा कम होने लगा है। जब हम महुआ बेचते हैं तो उसका 30-40 रुपया मुझे मिल जाता है, जिसको मैं अपनी पढ़ाई में खर्च करती हूँ। जब होली मनाते हैं तो महुआ को लेकर पूजा करते हैं।

महुआ बिननेवाले लोग इतनी मेहनत से एक-एक महुआ समेटकर लाते हैं। लेकिन उनको उसका फायदा अच्छे-से नहीं मिलता। उसका फायदा दूसरे लोग उठाते हैं।

तीस की मुर्गी बीस में
TEES KI MURGI BEES MEIN

चकमक में छपे बच्चों के किस्से-कहानियों, लेखों व चित्रों का संकलन
डिज़ाइन: कनक शशि
संकलन व सम्पादन: कविता तिवारी, कनक शशि व सजिता नायर
आवरण चित्र: रणबीर, एल.के.जी., लुधियाना, पंजाब, अगस्त 2011

यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इस किताब की सामग्री का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक, चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

ईडेलगिव फाउंडेशन और पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: जनवरी 2020/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 210 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-87926-39-4
मूल्य: ₹ 135.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72-73 www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

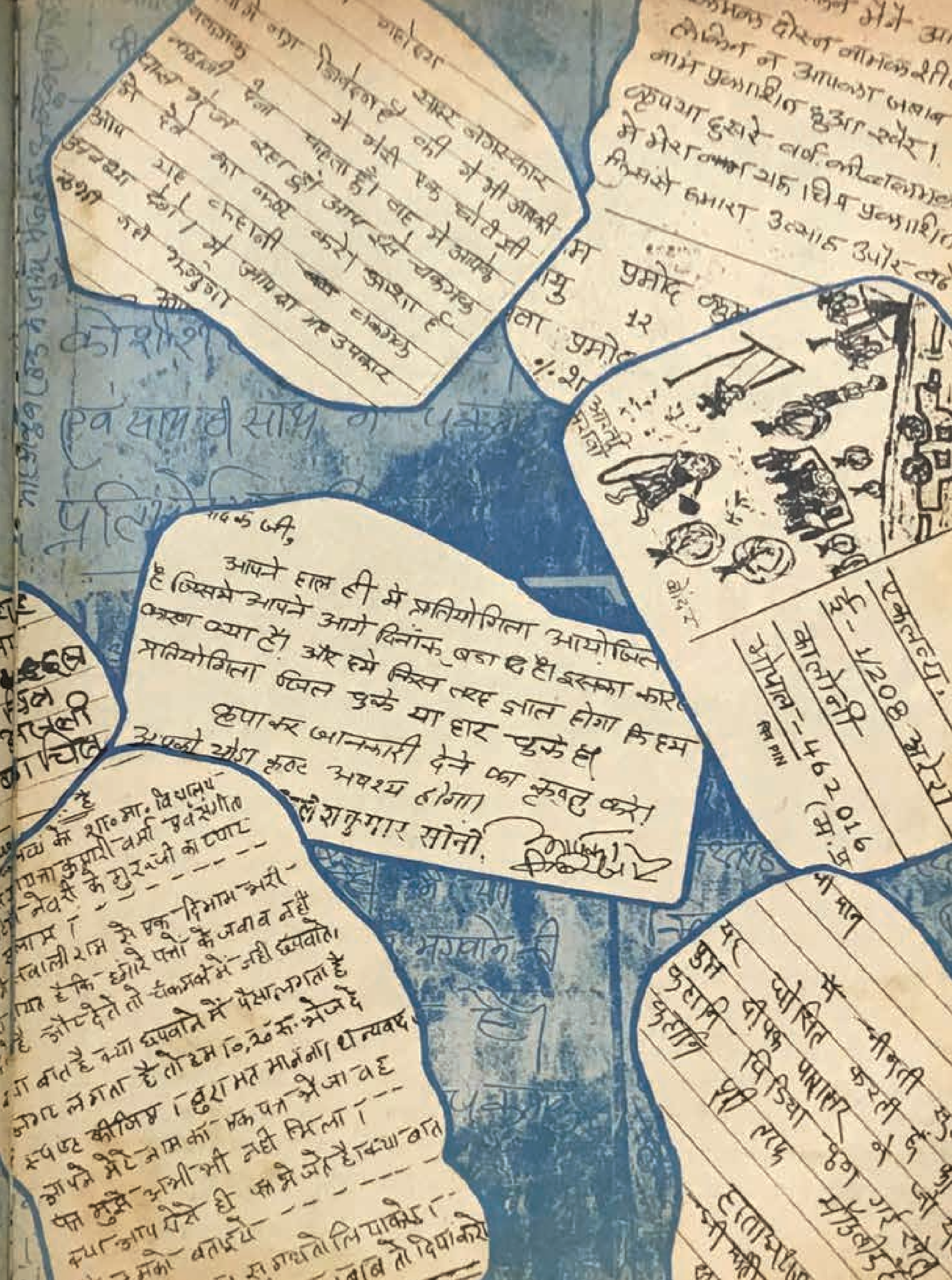
आपने हाल ही में प्रतियोगिता आयोजित
है जिसमें आपने आगे
कारण क्या है? और हमें किस तरह ज्ञात होगा कि हम
प्रतियोगिता जीत चुके या हार चुके हैं
कृपाकर जानकारी देने का कष्ट करें।
सोनी
एकलव्य
ई-1/208 अरेरा
कालोनी
भोपाल-462016
म.प्र.
कृपया दूसरे वर्ष
हमारा उत्साह और बढ़े
प्रमोद

रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के बारे में लिखे बच्चों के किस्से-कहानियाँ, उनके विचार और अनेक चीज़ों पर उनकी टिप्पणियाँ सब इन रचनाओं में पढ़ने को मिलेंगी। कहीं आराम से बैठकर पढ़ना, एक बार से मन नहीं भरने वाला।

एकलव्य

₹ 120.00

EdelGive Foundation
An Edelweiss Initiative

parag

9 789387 926394